مركز أصول
Osoul Center
www.osoulcenter.com

Rabwah

एक दिन अपने हबीब मुहम्मद ﷺ के साथ

लेखकः अबू ख़ालिद ऐमन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अबान्मी

अनुवादकः ज़ाकिर हुसैन वरासतुल्लाह

يوم مع حبيبك صلى الله عليه وسلم

تأليف

أبو خالد أيمن بن عبدالعزيز أبانمي

راجعه فضيلة الشيخ

د. عبدالكريم بن عبدالله الخضير

ترجمة

ذاكر حسين وراثة الله

Hindi

الهندية

हिंदी

ح جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالربوة ، ١٤٤٤هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

أبانمي ، أيمن بن عبدالعزيز بن عبدالمحسن

يوم مع حبيبك صلى الله عليه وسلم - الهندية. / أيمن بن عبدالعزيز بن عبدالمحسن أبانمي -

ط١ - الرياض، ١٤٤٤هـ

٨٨ ص، ١٢ سم x ١٦,٥ سم

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٣٨٢-٥٣-٠

١- السرة النبوية　　　أ.العنوان

ديوي ٢٣٩　　　١٤٤٤/٦١٦٣

رقم الايداع: ١٤٤٤/٦١٦٣

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٣٨٢-٥٣-٠

مركز أصول
Osoul Center
www.osoulcenter.com

यह पुस्तक उसूल सेंटर द्वारा तैयार और डिजाइन की गई है। और डिजाइन में उपयोग की जाने वाली सभी तसवीरें उसूल सेंटर के अधिकार अधीन हैं। और उसूल सेंटर प्रत्येक मुसलमान को किसी भी माध्यम से पुस्तक को मुद्रित और प्रकाशित करने की अनुमति देता है, बशर्ते कि स्रोत की ओर इंगित (मसदर की तरफ़ इशारा) किया गया हो, और पाठ में कोई बदलाव न किया गया हो। और मुद्रण के मामले में, उसूल सेंटर प्रिंटिंग क्वालीटी में मेयार (मानसम्मत मुद्रण) की ओर ख़्याल रखने की सलाह देता है।

+966 11 445 4900

+966 11 497 0126

P.O.Box 29465, Riyadh 11457

osoul@rabwah.sa

www.osoulcenter.com

بسم الله الرحمن الرحيم

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान (कृपालु)
निहायत रहम करने वाला (दयालु) है

हबीब ﷺ का हुल्या 17

नींद से जागने, वुज़ू करने और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के संबंध में नबी ﷺ का तरीक़ा और निर्देशना 19

नमाज़ में आप ﷺ का तरीक़ा तथा निर्देशना 29

सुबह व शाम के अज़्कार में नबी ﷺ का तरीक़ा और निर्देशना 51

पानाहार (खानपान) में नबी ﷺ का तरीक़ा व निर्देशना 59

पहनने, चलने-फिरने और सवार होने में आप ﷺ का तरीक़ा तथा निर्देशना 63

रसूलुल्लाह ﷺ के अख़्लाक़ और लोगों के साथ तआ़मुल (आचरण) में आप का तरीक़ा तथा निर्देशना 67

रसूलुल्लाह ﷺ का तरीक़ा तथा निर्देशना अपने घर में रहन सहन के बारे में और आप के सोने के संबंध में 75

एक दिन अपने हबीब मुहम्मद ﷺ के साथ

सारी तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपनी महब्बत के रास्ते को अपने ख़लील मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की इत्तिबा और उन की पैरवी के साथ जोड़ दिया है। इर्शाद है:

﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِى يُحْبِبْكُمُ ٱللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ [آل عمران : ٣١]

“कह दीजिये कि अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबा करो, खुद अल्लाह तुम से महब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा, और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहेरबान है।” {आलि इम्रानः ३१}

और उस शख़्स के ईमान को मादूम (विलुप्त) क़रार दिया जिस ने मख़लूक़ में से किसी की महब्बत को उस के हबीब ﷺ की महब्बत पर मुक़द्दम किया। रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः

«لاَ يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهِ وَوَلَدِهِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ». [صحيح البخاري: ١٥]

“तुम में से कोई मुमिन नहीं हो सकता यहाँ तक कि मैं उस के नज़दीक उस के वालिद और उस की औलाद तथा तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब बन जाऊँ।” {बुख़ारीः १५}

रात दिन की गरदिश की मिक़्दार, ज़िक्र करने वाले नेक लोगों के ज़िक्र के बराबर, बारिश के क़त्रों, दरख़्तों के पत्तों और बालू तथा पत्थरों की संख्या परिमाण, कामिल तथा परिपूर्ण दुरूद व सलाम (रहमत व शांति) नाज़िल हो नबी मुस्तफ़ा, चुनिंदा रहनुमा, रोशन चिराग़, बशारत देने वाले दाई (ख़ुशख़बरी सुनाने वाले आह्वायक), हदियए रहमत और तोह्फ़ए ने'मत (दया का उपहार तथा प्रदत्त अनुदान) मुहम्मद पर, और उन के पाकीज़ा आल व औलाद पर, तथा मुहाजिरीन व अंसार पर और बदले के दिन (क़ियामत) तक भलाई के साथ उन की इत्तिबा करने वालों पर। अम्मा बा'द (तत्पश्चात):

बेशक एक सच्चा मुस्लिम अपने हबीब मुहम्मद ﷺ की तरफ़ शौक़ (आकांक्षा) रखते हुये तमन्ना करता है कि काश वह आप के सहाबीयों में से होता, आप की मजलिस में बैठ कर आप के शरीफ़ चेहरे के नूर से अपनी दोनों आँखों को लबरेज़ करता, आप की मीठी हदीसों को सुनता, दिल को जीतने वाले आप के अख़लाक़ को देखता और आप के अपने रब की इबादत के तौर तरीक़े से वाक़िफ़ होता, अगर चे इस के लिए हर वह चीज़ निछावर करना पड़ता जिस का वह मालिक है, ताकि हबीब ﷺ की निम्नोक्त वाणी को वास्तवायन कर (दर्ज ज़ैल फ़रमान को हक़ीक़त का जामा पहना) सके:

«مِنْ أَشَدِّ أُمَّتِي لِي حُبًّا نَاسٌ يَكُونُونَ بَعْدِي، يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ رَآنِي بِأَهْلِهِ وَمَالِهِ».

[صحيح مسلم: ٢٨٣٢]

"मेरी उम्मत में मुझे बहुत ज़्यादा चाहने वाले वह लोग हूँगे जो मेरे बाद पैदा हूँगे। उन में कोई यह ख़ाहिश रखेगा कि काश अपने घर वालों और माल सब के बदले मुझ को देख ले।" {मुस्लिम: २८३२}

इसी लिए इस संबंध में ताबेईन रहिमहुमुल्लाह का हाल यह था:

इब्ने सीरीन रहिमहुल्लाह ने अ़बीदा बिन अ़म्र रहिमहुल्लाह से कहा: 'हमारे

पास नबी ﷺ के कुछ बाल हैं जो हम ने अनस बिन मालिक رضي الله عنه से या उन के अह्ल (परिजनों) से पाया है।' तो अ़बीदा रहिमहुल्लाह ने कहा: 'मेरे पास आप ﷺ का एक बाल होना यह मेरे नज़दीक दुनिया और उस में जो कुछ है उस से ज़्यादा मह्बूब और पसंदीदा है।' {बुख़ारी: १७०}

इस पर टिप्पणी करते हुये इमाम ज़हबी रहिमहुल्लाह ने कहा: 'यह इमाम इस तरह की बात नबी ﷺ के पचास साल के बाद कह रहे हैं, तो भला हम अपने इस ज़माने में क्या कहेंगे अगर हमें साबित सनद (प्रमाणित सूत्र) के साथ आप ﷺ के कुछ बाल मिल जायें?!!' {सियरु आलामिन नुबला: ४/३५} और यह बड़ी ही मुशकिल से हासिल हो सकता है।

इमाम ज़हबी रहिमहुल्लाह ने यह भी कहा: 'साबित है कि नबी ﷺ ने जब अपना सर मुंडाया तो अपने पाकीज़ा बालों से अपने सहाबीयों को सम्मानित (फ़ैज़याब) करने के लिए उन्हें उन के दरमियान तक़सीम फ़रमा दिया। पस हाय अफ़सोस! काश हमें उन में से एक बाल ही बोसा देने (सीने से लगाने) के लिए मिल जाता।' {सियरु आलामिन नुबला: १०/५२७}

जुबैर बिन नुफ़ैल रहिमहुल्लाह ने कहा: 'एक दिन हम मिक़्दाद बिन अस्वद رضي الله عنه के पास बैठे थे। पस वहाँ से एक आदमी का गुज़र हुआ। तो उन्हों ने फ़रमाया: ख़ुशख़बरी है इन दोनों आँखों के लिए जिन्हों ने रसूलुल्लाह ﷺ का दर्शन किया है। अल्लाह की क़सम! हमारी चाहत थी कि (काश) हम भी वह चीज़ देख लेते जो आप ने देखा है और उस चीज़ की गवाही देते जिस की गवाही आप ने दी है।' {मज्मउज़् ज़वाइद: ६/२०}

साबित अल्बुनानी रहिमहुल्लाह जब नबी ﷺ के ख़ादिम अनस बिन मालिक رضي الله عنه को देखते तो उन की तरफ़ मुतवज्जह हो कर (बढ़ कर) उन के हाथ का बोसा लेते और फ़रमाते: 'बेशक यह वह हाथ है जिस ने रसूलुल्लाह ﷺ के दस्ते मुबारक को स्पर्श किया (छूआ) है।'

और यह्या बिन हारिस रहिमहुल्लाह ने वासिला बिन अस्क़ा رضي الله عنه के साथ इसी तरह किया था। नीज़ बाज़ ताबेईन रहिमहुमुल्लाह ने भी सलमा बिन अक्वा के साथ ऐसा ही करते हुये उन के उस हाथ का बोसा लिया जिस हाथ से उन्हों ने रसूलुल्लाह ﷺ से बैअ़त की थी।

'खजूर का एक तना था जिस का सहारा रसूलुल्लाह ﷺ ख़ुतबे की हालत में लिया करते थे। फिर (जब आप के लिए मिम्बर रखा गया तो) आप ने तने को छोड़ कर मिम्बर को अपना लिया। तो तना रोने लगा और जिस ऊँटनी से उस का बच्चा छीन लिया जाये उस ऊँटनी के रोने की आवाज़ की तरह उस की आवाज़ सुनी गई, यहाँ तक कि इसे मस्जिद में मौजूद तमाम लोगों ने सुनी। फिर नबी ﷺ तशरीफ़ लाये और उस पर अपना दस्ते मुबारक रखा तो वह ख़ामूश हो गया।' {बुख़ारीः ३४८५}

हसन बसरी रहिमहुल्लाह जब यह हदीस (क़िस्सा) बयान करते तो फ़रमातेः 'ऐ मुसलमानों की जमाअ़त! लकड़ी रसूलुल्लाह ﷺ से मिलने के शौक़ व आकांक्षा में रोती है, तो तुम ज़्यादा हक़दार हो कि आप से मिलने की आकांक्षा रखो।'

ताबिईन का मामला सिर्फ़ आप ﷺ से महब्बत और आप से मिलने के शौक़ पर ही नहीं रुका, बल्कि उन्हों ने आप की सुन्नत पर अ़मल किया और आप की इत्तिबा की, ताकि वह रसूलुल्लाह ﷺ की बाबत उन चीज़ों को पा सकें जो उन से फ़ौत हो चुकी हैं।

ताबिईन के सरदार अबू मुस्लिम ख़ौलानी रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैंः 'क्या मुहम्मद ﷺ के सहाबा का गुमान है कि उन्हों ने आप ﷺ को हमारे अ़लावा अपने लिए मख़सूस कर लिया। अल्लाह की क़सम! आप ﷺ की बाबत हम उन से सख़्त मुक़ाबला (प्रतियोगिता/कम्पीटीशन) करेंगे, यहाँ तक कि वह जान लें कि उन्हों ने अपने पीछे मर्दों को छोड़ा है।'

अबू मुस्लिम रहिमहुल्लाह इस बात पर तैयार नहीं हुये कि सहाबये किराम ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ को सिर्फ़ अपने लिए मख़सूस कर लें, और यह मनूशा ज़ाहिर (इच्छा प्रकट) किये कि वह आप ﷺ से महब्बत की बाबत उन के साथ मुक़ाबला भी करेंगे।

बेशक आप रहिमहुल्लाह ने मुनाफ़सा (सबक़त ले जाने और आगे बढ़ने) के मफ़हूम को अच्छी तरह इहसास करते हुये समझा कि क़ुर्ब व इताअ़त (नज़दीकी और फ़रमा बरदारी) के मामले में दूसरे को तरजीह (प्राधान्य) देना नहीं है, और यह कि सबक़त फ़ज़ीलत व सिफ़ात की सबक़त (वास्तव में प्रतियोगिता मर्यादा और गुणों की प्राप्ति का प्रतियोगिता) है, क्योंकि जिस का अ़मल उस को कोताह कर दे (जिस का अ़मल नाक़िस हो) तो उस का ख़ानदान व नसब उस के कुछ काम नहीं आयेगा। और जैसा कि उ़लमा ने कहाः जब तुम ऐसे आदमी को देखो जो तुम से दुनिया के संबंध में सबक़त ले जा रहा है, तो तुम उस से आख़िरत के संबंध में सबक़त ले जाओ, और अगर हो सके कि अल्लाह की तरफ़ तुम से कोई सबक़त न ले जा पाये तो ऐसा ही करो।

ताबिईन के बाद सलफ़े सालेहीन (नेक पूर्वज) भी हर छोटी बड़ी चीज़ में सुन्नत की इत्तिबा करने पर हरीस (उत्सुक तथा तत्पर) थे।

इमाम अहमद रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैंः 'कोई ऐसी हदीस नहीं जिसे मैं ने लिखा मगर मैं ने उस पर अ़मल किया, यहाँ तक कि मेरे सामने से यह हदीस गुज़री कि नबी ﷺ ने पछना लगवा कर हज्जाम अबू तैबा को एक दीनार दिया था, तो मैं ने भी हज्जाम को एक दीनार दिया जब मैं ने पछना लगवाया।'

इमाम अहमद रहिमहुल्लाह ने मज़ीद फ़रमायाः 'अगर तुम से हो सके कि तुम एक बाल भी नबी ﷺ की इत्तिबा के बग़ैर न खुजलाओ तो ऐसा करो।'

और यह तमाम चीज़ों में नबी ﷺ की बशरी कमाल (मानवीय पूर्णता) ही के सबब है। जैसा कि इमाम नववी रहिमहुल्लाह ने कहा:

'अगर तुम नबी ﷺ की शक्ल व सूरत (हुल्या) को देखो तो इतनी ख़ूबसूरत कि जिस के बाद और ख़ूबसूरती नहीं हो सकती। अगर तुम आप ﷺ के अख़्लाक़ को देखो तो इतना कामिल कि जिस के बाद और कमाल (पूर्णता) नहीं हो सकता। और अगर तुम उ़मूमन (साधरणतः) तमाम लोगों के साथ और ख़ुसूसन (ख़ासकर) मुसलमानों के साथ आप ﷺ के एहसान व भलाई और फ़ज़्ल व मेहरबानी को देखो तो ऐसी वफ़ादारी कि जिस के बाद और वफ़ादारी नहीं हो सकती।'

बिला शुबह (निःसंदेह) सब से बड़ी नेमतों में से है कि बंदा नबी ﷺ की महब्बत की तौफ़ीक़ से नवाज़ा जाये। जैसा कि इब्नुल क़ैइम रहिमहुल्लाह ने कहा:

'जब बंदा इस में -यानी दिल में खटकने और गुज़रने वाली तमाम बातों के साथ अपने रब की मन्शा पर- सच्चा उतरे, तो वह रसूल ﷺ की महब्बत की तौफ़ीक़ से नवाज़ा जाता है और उस की रूहानीयत उस के दिल पर ग़ालिब आ जाती है। चुनांचि वह आप ﷺ को उसी तरह अपना इमाम, मुअ़ल्लिम, उस्ताद, शैख़ और क़ुदवा (आदर्श) बना लेता है, जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने आप को अपना नबी व रसूल तथा उस की तरफ़ रहनुमाई करने वाला बनाया। अतः बंदा आप ﷺ की सीरत (जीवनी), आप के मामले की बुनयादी चीज़ों और आप पर वह्य नाज़िल होने की कैफ़ीयत से मुत्तला (विदित) हो। नीज़ आप के हरकात व सकनात (चाल-चलन और रहन-सहन), जागने सोने, इबादत और अपने अह्ल व अ़याल तथा अपने सहाबा के साथ मामला करने में आप की सिफ़तें और आप के आदाब व अख़्लाक़ को जाने, यहाँ तक कि ऐसा बन जाये गोया कि आप के साथ आप के बाज़ सहाबीयों में से है। {मदारिजुस सालिकीनः ३/२६८}

मैं कहता हूँ: जिस शख़्स से मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की सुहबत फ़ौत हो गई उस से आप की सुन्नत फ़ौत न होने पाये।

कितनी बेहतरीन बात है कि तुम अपने हबीब ﷺ के तमाम अक़्वाल व अफ़्आ़ल (बातों और कर्मों) की इक़्तिदा और हर चीज़ में आप के तरीक़े की इत्तिबा करते हुये आप के साथ एक दिन गुज़ारो। उस वक़्त तुम बे हद ख़ुश नसीबी महसूस करोगे। और क्यों न ऐसा हो?? जब कि तुम सब से अफ़ज़ल मख़्लूक़ की इक़्तिदा और इत्तिबा करते हो, गोया कि तुम उन को अपने सामने देख रहे हो। -- तजुरबा करो -- ऐसा ही पाओगे।

तंबीह (चेतावनी): किसी दिन को ख़ास करना जायज़ नहीं है इस अ़क़ीदत और आस्था से कि उस की कोई मख़सूस फ़ज़ीलत है। इस लिए किसी भी दिन को अख़्तियार कर लो ताकि सुहबत की शुरूआ़त हो इन् शा अल्लाह।

और हबीब ﷺ के साथ एक दिन गुज़ारने से पहले ज़रूरी है कि हम आप के हुल्या (ख़ल्क़ी सिफ़त) के संबंध में जानकारी हासिल करें।

हबीब ﷺ का हुल्या

रसूलुल्लाह ﷺ दरमियाना क़द (मेडियम साइज़) के थे। दोनों कंधे के बीच फ़ासिला था (सीना चौड़ा था)। दोनों कानों के लौ तक लटकते बाल थे। लोगों में सब से ज़्यादा ख़ूब सूरत और ख़ूब सीरत थे। बहुत ज़्यादा लंबे भी नहीं थे और छोटे क़द वाले भी नहीं। सख़्त गोरे भी नहीं थे और सख़्त गंदुमी भी नहीं। बाल घुंघरियाले (उल्झे हुये) भी नहीं थे और सीधे (लटके हुये) भी नहीं। लोगों में सब से अधिक सुंदर थे। ऐसे सफ़ेद और ख़ूबसूरत थे गोया कि चांदी से ढाले गये हैं। {अल्बानी रचित सिल्सिला सहीहा}

और आप ﷺ साफ़ शफ़्फ़ाफ़ रंग वाले (उज्ज्वल) थे गोया कि आप का पसीना मोती है। आप घनी दाढ़ी वाले थे। जाबिर बिन समुरा رضي الله عنه से पूछा गयाः क्या आप का चेहरा तलवार की तरह था? तो उन्हों ने कहाः बल्कि सूरज और चाँद की तरह था और गोल था।

रसूलुल्लाह ﷺ कुशादा मुँह वाले, दराज़ शिगाफ़ आँखों वाले और ऐड़ी पर कम गोश्त वाले थे। आप सफ़ेद रंग, मलाहत दार (नमकीनी के साथ) और मियाना क़द थे, न भारी भरकम, न हल्के पतले, न लंबे और न ही नाटे। आप के हाथ और पैर भरे हुये थे, और आप की हथेलीयाँ कुशादा थीं। अनस رضي الله عنه बयान फ़रमाते हैं:

«مَا مَسَسْتُ حَرِيرًا وَلاَ دِيبَاجًا أَلْيَنَ مِنْ كَفِّ النَّبِيِّ ﷺ وَلاَ شَمَمْتُ مِسْكًا، وَلاَ عَنْبَرًا أَطْيَبَ مِنْ رَائِحَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ». [صحيح مسلم]

''मैं ने कोई हरीर और दीबाज (रेशम और रेशमी कपड़े) ऐसा नहीं छूआ जो नबी ﷺ की हथेली से ज़्यादा नरम हो। और मैं ने कोई मिश्क और अंबर नहीं सूंघा जो रसूलुल्लाह ﷺ की ख़ुशबू से ज़्यादा ख़ुशबूदार हो।''

और आप का पसीना पोंछ पोंछ कर बोतल में रखा जाता, ताकि वह सब से बढ़याँ ख़ुशबू में से हो जाये।

और अब मुख़्तसरन् (संक्षिप्त रूप से) नबी ﷺ के दिन के संबंध में शुरू करने का वक़्त है। इस में हम ने कुतुबे सित्ताह (हदीस की मशहूर छ किताबों) पर इक्तिफ़ा (बस) करते हुये ज़माना के मुहद्दिस इमाम नासिरुद्दीन अल्अल्बानी के नज़दीक जो सहीह है उसी पर एतिमाद किया है। वैसे ज़रूरत पड़ने पर कुतुबे सित्ताह के अ़लावा की हदीसें भी ली गईं हैं मगर बहुत कम।

नींद से जागने, वुज़ू करने और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के संबंध में नबी ﷺ का तरीक़ा और निर्देशना

रसूलुल्लाह ﷺ जब नींद से बेदार होते तो पढ़तेः

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ». [صحيح مسلم]

''अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना ब'द मा अमातना व इलैहिन् नुशूर''।

''तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें मारने के बाद ज़िंदगी दी और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।'' {मुस्लिम}

और फिर आप शुरूआत मिसवाक से फ़रमाते।

और बसा औक़ात आप पढ़ा करतेः

﴿إِنَّ فِي خَلْقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱخْتِلَٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ لَءَايَٰتٍ لِّأُوْلِي
ٱلْأَلْبَٰبِ ١٩٠ ٱلَّذِينَ يَذْكُرُونَ ٱللَّهَ قِيَٰمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي
خَلْقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَٰطِلًا سُبْحَٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ١٩١
رَبَّنَآ إِنَّكَ مَن تُدْخِلِ ٱلنَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُۥ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ١٩٢ رَّبَّنَآ إِنَّنَا
سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَٰنِ أَنْ ءَامِنُوا۟ بِرَبِّكُمْ فَـَٔامَنَّا رَبَّنَا فَٱغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا
وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّـَٔاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ ٱلْأَبْرَارِ ١٩٣ رَبَّنَا وَءَاتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ
رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ ٱلْمِيعَادَ ١٩٤ فَٱسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي

لَآ أُضِيعُ عَمَلَ عَٰمِلٖ مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوۡ أُنثَىٰۖ بَعۡضُكُم مِّنۢ بَعۡضٖۖ فَٱلَّذِينَ هَاجَرُواْ
وَأُخۡرِجُواْ مِن دِيَٰرِهِمۡ وَأُوذُواْ فِي سَبِيلِي وَقَٰتَلُواْ وَقُتِلُواْ لَأُكَفِّرَنَّ عَنۡهُمۡ سَيِّـَٔاتِهِمۡ
وَلَأُدۡخِلَنَّهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ ثَوَابٗا مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِۚ وَٱللَّهُ عِندَهُۥ
حُسۡنُ ٱلثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ فِي ٱلۡبِلَٰدِ ﴿١٩٦﴾ مَتَٰعٞ قَلِيلٞ ثُمَّ
مَأۡوَىٰهُمۡ جَهَنَّمُۖ وَبِئۡسَ ٱلۡمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لَٰكِنِ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوۡاْ رَبَّهُمۡ لَهُمۡ جَنَّٰتٞ تَجۡرِي مِن
تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلٗا مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِۗ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ خَيۡرٞ لِّلۡأَبۡرَارِ ﴿١٩٨﴾
وَإِنَّ مِنۡ أَهۡلِ ٱلۡكِتَٰبِ لَمَن يُؤۡمِنُ بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡكُمۡ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِمۡ
خَٰشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشۡتَرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ ثَمَنٗا قَلِيلًاۗ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمۡ أَجۡرُهُمۡ
عِندَ رَبِّهِمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ ٱلۡحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱصۡبِرُواْ
وَصَابِرُواْ وَرَابِطُواْ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾ [آل عمران: ١٩٠-٢٠٠]

‘‘बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में और रात दिन के हेर फेर में यक़ीनन उन अ़क्लमंदों के लिए निशानियाँ हैं। जो अल्लाह का ज़िक्र खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुये करते हैं, और आसमान व ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर व फ़िक्र करते हैं, और कहते हैं: ऐ हमारे परवरदिगार! तू ने यह बे फ़ायदा नहीं बनाया, तू पाक है, पस हमें आग के अ़ज़ाब से बचा ले। ऐ हमारे पालने वाले! तू जिसे जहन्नम में डाले यक़ीनन तू ने उसे रुसवा किया, और ज़ालिमों का मददगार कोई नहीं। ऐ हमारे रब! हम ने सुना कि एक मुनादी करने वाला बुलंद आवाज़ के साथ ईमान की तरफ़ बुला रहा है कि लोगो! अपने रब पर ईमान लाओ, पस हम ईमान लाये। या इलाही! अब तू हमारे गुनाह माफ़ फ़रमा, और हमारी बुराइयाँ हम से दूर कर दे और हमारी मौत नेकों के साथ कर। ऐ हमारे पालने वाले! हमें वह दे जिस का वादा तू ने हम से अपने रसूलों की ज़ुबानी किया है और हमें क़ियामत के दिन रुसवा न कर, यक़ीनन तू वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता। पस उन के रब ने उन की दुआ़ क़बूल फ़रमा

ली कि तुम में से किसी काम करने वाले के काम को, चाहे वह मर्द हो या औ़रत, मैं हरगिज़ बरबाद नहीं करता, तुम आपस में एक दूसरे के हम जिंस हो, इस लिए वह लोग जिन्हों ने हिजरत की, और अपने घरों से निकाल दिये गये, और जिन्हें मेरी राह में सताया गया, और जिन्हों ने जिहाद किया और शहीद किये गये, मैं ज़रूर ज़रूर उन की बुराइयाँ उन से दूर कर दूंगा, और अवश्य उन्हें उन जन्नतों में ले जाऊँगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, यह है सवाब अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह ही के पास बेहतरीन सवाब है। तुझे काफ़िरों का शहरों में चलना फिरना धोखे में न डाल दे। यह तो बहुत ही थोड़ा फ़ायदा है, इस के बाद उन का ठिकाना तो जहन्नम है, और वह बुरी जगह है। लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उन में वह हमेशा रहेंगे, यह मेहमानी है अल्लाह की तरफ़ से, और नेक लोगों के लिए जो कुछ अल्लाह के पास है वह बहुत ही बेहतर है। यक़ीनन अह्ले किताब में से बाज़ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान लाते हैं, और तुम्हारी तरफ़ जो उतारा गया है और उन की जानिब जो नाज़िल हुआ उस पर भी, अल्लाह से डरते हैं और अल्लाह की आयतों को थोड़ी थोड़ी क़ीमत पर बेचते भी नहीं, उन का बदला उन के रब के पास है, यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ ईमान वालो! तुम साबित क़दम रहो, और एक दूसरे को थामे रखो, और जिहाद के लिए तैयार रहो और अल्लाह से डरो ताकि तुम मुराद को पहुँचो।" {आले इम्रानः १६२-२००}

फिर आप ﷺ बेहतरीन तरीक़े से वुज़ू फ़रमाते।

और जब आप क़ज़ाए हाजत के लिए तशरीफ़ ले जाते तो पढ़तेः

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ».

"अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् ख़ुबुसि वल्ख़बाइस"।

“ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ ख़बीस जिन्नों और ख़बीस जिन्नीयों से।” {बुख़ारी}

और जब निकलते तो कहतेः

«غُفْرَانَكَ».

“गुफ़रानक”।

“(ऐ अल्लाह!) मैं तेरी बख़शिश तलब करता हूँ।” {अलबानी रचित सहीह इब्नु माजा}

और आप कभी पानी से, कभी तीन पत्थरों से और कभी पानी और पत्थर दोनों से इसतिंजा फ़रमाते। {बुख़ारी}

और आप लोगों की नज़रों से ओझल हो जाते (छुप जाते)। {इब्नु माजा}

और आप खड़े हो कर पेशाब नहीं करते मगर शाज़ व नादिर (कभी कभार)। {मुस्लिम}

और जब आप वुज़ू फ़रमाते तो पानी में मियाना रवी फ़रमाते। और सब से पहले तीन मर्तबा (कलाई तक) अपने दोनों हाथों को धुलते। {बुख़ारी}

फिर तीन चुल्लू पानी से तीन बार कुल्ली करते और नाक में पानी चढ़ाते, हर चुल्लू के आधे से कुल्ली करते और बाक़ी आधा नाक में चढ़ाते। और अपने दायें हाथ से नाक में पानी चढ़ाते और बायें हाथ से नाक झाड़ कर साफ़ करते। और रोज़े की हालत में न हो तो नाक में अच्छी तरह पानी चढ़ाने का हुक्म दिया करते। {बुख़ारी, तिर्मिज़ी}

फिर अपने चेहरे को सर के बाल निकलने की जगह से दाढ़ी तक तीन मरतबा धुलते और कभी कभी अपनी दाढ़ीयों का ख़िलाल भी करते। {बुख़ारी, तिर्मिज़ी}

फिर उँगली के किनारे से ले कर कुहनी तक अपने दोनों हाथों को तीन मरतबा धोते। {बुख़ारी} और अपनी उँगलीयों के दरमियान ख़िलाल फ़रमाते। {अलूबानी रचित सहीह अबू दाऊद}

फिर अपने दोनों हाथों से अपने सर का मसह इस तरह करते कि सर के अगले हिस्से से शुरू कर के दोनों हाथों को गुद्दी तक ले जाते, फिर उन्हें उस जगह तक वापस लाते जहाँ से शुरू करते। {बुख़ारी}

फिर अपने दोनों कानों के बाहरी और अंदरूनी हिस्से का मसह फ़रमाते। {अलूबानी रचित सहीह अबू दाऊद}

इस के बाद टख़नों तक अपने दोनों पैरों को तीन मरतबा धोते। {बुख़ारी}

आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

«مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُسْبِغُ الْوُضُوءَ ثُمَّ يَقُولُ: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، إِلاَّ فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةُ يَدْخُلُ مِنْ أَيِّهَا شَاءَ». [صحيح مسلم].

“तुम में से जो शख़्स वुज़ू करे और कामिल वुज़ू करे, फिर कहे: ‘अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहु व रसूलुहु’ (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और रसूल हैं), तो उस के लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, वह जिस में से चाहे दाख़िल हो जाये।” {मुस्लिम}

उक्त दुआ़ के साथ यह दुआ़ भी पढ़े:

«اللَّهُمَّ اجْعلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْـمُتَطَهِّرِينَ». [صحيح الترمذي للألباني].

“अल्लाहुम्मज्अ़ल्नी मिनत्तौवाबीन वज्अ़ल्नी मिनल् मुततह्हिरीन”।

“ऐ अल्लाह! मुझे ख़ूब तौबा करने वालों में से बना और ख़ूब पाकीज़गी हासिल करने वालों में से बना।”

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

«إِذَا تَوَضَّأَ الْعَبْدُ الْمُسْلِمُ – أَوِ الْمُؤْمِنُ – فَغَسَلَ وَجْهَهُ، خَرَجَ مِنْ وَجْهِهِ كُلُّ خَطِيئَةٍ نَظَرَ إِلَيْهَا بِعَيْنَيْهِ مَعَ الْمَاءِ، أَوْ مَعَ آخِرِ قَطْرِ الْمَاءِ، فَإِذَا غَسَلَ يَدَيْهِ، خَرَجَ مِنْ يَدَيْهِ كُلُّ خَطِيئَةٍ كَانَ بَطَشَتْهَا يَدَاهُ مَعَ الْمَاءِ، أَوْ مَعَ آخِرِ قَطْرِ الْمَاءِ، فَإِذَا غَسَلَ رِجْلَيْهِ، خَرَجَتْ كُلُّ خَطِيئَةٍ مَشَتْهَا رِجْلَاهُ مَعَ الْمَاءِ، أَوْ مَعَ آخِرِ قَطْرِ الْمَاءِ، حَتَّى يَخْرُجَ نَقِيًّا مِنَ الذُّنُوبِ». [صحيح مسلم].

“जब मुस्लिम या मुमिन बंदा वुज़ू करता है, पस वह अपना चेहरा धोता है तो पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ उस के चेहरे से वह तमाम ख़तायें निकल जाती हैं जिन की तरफ़ उस ने अपनी आँखों से देखा था (आँखों से सर ज़द होने वाले गुनाह माफ़ हो जाते हैं)। फिर जब वह अपने हाथों को धोता है तो पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ उस के हाथों से वह तमाम गुनाह निकल जाते हैं जिन को उस के हाथों ने पकड़ा था (उन का इर्तिकाब हाथों ने किया था)। और जब अपने पैरों को धोता है तो पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ वह तमाम गुनाह निकल जाते हैं जिन की तरफ़ उस के पैर चल कर गये थे, यहाँ तक कि वह गुनाहों से पाक हो कर निकल आता है।” {मुस्लिम}

और आप ﷺ तहज्जुद की नमाज़ गियारह रकअ़त पढ़ते। आप पहले चार रकअ़त पढ़ते, पस न पूछो कि वह कितनी हसीन और कितनी लंबी होती थीं। फिर चार रकअ़त पढ़ते, पस उन के हुस्न और लंबाई के बारे में मत पूछो। फिर तीन रकअ़त वित्र पढ़ते। और आप कभी तेरह रकअ़त भी पढ़ा करते। {बुख़ारी}

फिर मुअज़्ज़िन के आने तक आप लेट जाते। इस के बाद उठ कर फ़ज्र की दो रकअ़त सुन्नत अदा फ़रमाते, पहली रकअ़त में (सूरतुल् फ़ातिहा के बाद) सूरह काफ़िरून और दूसरी रकअ़त में सूरह इख़लास पढ़ते। और कभी कभी मज़कूरा दो रकअ़त सुन्नत के बाद अपने दायें पहलू पर लेट जाते। {बुख़ारी, मुस्लिम}

और आप अज़ान का जवाब देते हुये वही कहते जो मुअज़्ज़िन कहते, मगर (حَيَّ عَلَى الصَّلاَةِ، حَيَّ عَلَى الْفَلاَحِ) 'हैय अ़लस्सलाह' और 'हैय अ़लल् फ़लाह' के जवाब में (لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ) 'ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह' कहते। और आप ने यह ख़बर दी कि जो शख़्स दिल से यह कहेगा (अज़ान का जवाब देगा) वह जन्नत में जायेगा। {मुस्लिम}

और आप ने (अज़ान के बाद) अपने ऊपर दुरूद पढ़ने का हुक्म दिया। और रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

«مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ النِّدَاءَ: اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، وَالصَّلاَةِ الْقَائِمَةِ، آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ، وَالْفَضِيلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ، حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ». [صحيح البخاري].

''जो शख़्स अज़ान सुन कर यह कहे: 'अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद् दअ़्वतित् ताम्मति वस्सलातिल् क़ाइमति आति मुहम्मदनिल् वसीलत वल्फ़ज़ीलत वब्अ़स्हु मक़ामम् महमूदनिल्लज़ी वअ़त्तहु' (ऐ अल्लाह! इस कामिल दअ़्वत और क़ायम होने वाली नमाज़ के मालिक! मुहम्मद ﷺ को वसीला और फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमा, और उन्हें उस मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमा जिस का तू ने उन से वादा किया है), तो क़ियामत वाले दिन उस के लिए मेरी शफ़ाअ़त हलाल हो जायेगी।'' {बुख़ारी}

नीज़ फ़रमाया:

«مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ الْـمُؤَذِّنَ: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ

مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا، وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولاً، وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا، غُفِرَ لَهُ ذَنْبُهُ». [صحيح مسلم].

“जिस शख़्स ने अज़ान सुन कर कहाः ‘अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, व अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहु व रसूलुहु, रज़ीतु बिल्लाहि रब्बा, व बिमुहम्मदिन रसूला, व बिल्इस्लामि दीना’ (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, और यह कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और रसूल हैं, मैं अल्लाह के रब होने पर, मुहम्मद ﷺ के रसूल होने पर और इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हूँ), तो उस के गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।” {मुस्लिम}

फिर आप ﷺ नमाज़ के लिए निकलते और मस्जिद की तरफ़ जाते हुये यह दुआ पढ़तेः

«اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي لِسَانِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَمِنْ فَوْقِي نُورًا، وَمِنْ تَحْتِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ شِمَالِي نُورًا، وَمِنْ أَمَامِي نُورًا، وَمِنْ خَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ فِي نَفْسِي نُورًا، وَعَظِّمْ لِي نُورًا». [صحيح مسلم].

“अल्लाहुम्मज्अ़ल् फ़ी क़ल्बी नूरा, व फ़ी लिसानी नूरा, व फ़ी समई नूरा, व फ़ी बसरी नुरा, व मिन् फ़ौक़ी नूरा, व मिन् तह्ती नूरा, व अ़न् यमीनी नूरा, व अ़न् शिमाली नूरा, व मिन् अमामी नूरा, व मिन् ख़ल्फ़ी नूरा, वज्अ़ल् फ़ी नफ़्सी नूरा, व अ़ज़्ज़िम ली नूरा।”

“ऐ अल्लाह! मेरे दिल में, मेरी ज़ुबान में, मेरे कान में और मेरी निगाह में नूर भर दे। नीज़ मेरे ऊपर से, मेरे नीचे से, मेरे दायें से, मेरे बायें से, मेरे आगे और मेरे पीछे से नूर कर दे। और मेरे नफ़्स में भी नूर भर दे तथा नूर को मेरे लिए महान और विशाल बना दे।” {मुस्लिम}

और आप ﷺ ने फ़रमाया:

«بَشِّرِ الْمَشَّائِينَ فِي الظُّلَمِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِالنُّورِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ». [صحيح أبي داود للألباني].

''तारीकी में मस्जिदों की तरफ़ चल कर जाने वालों को क़ियामत के दिन कामिल नूर की बशारत दे दो।'' {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और रसूलुल्लाह ﷺ जब मस्जिद में दाख़िल होते तो पहले अपने दायें पैर को बढ़ाते हुये कहते:

«أَعُوذُ بِاللهِ الْعَظِيمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ». [صحيح أبي داود للألباني]

''अऊज़ु बिल्लाहिल् अ़ज़ीम व बिवज्हिहिल् करीम व सुल्तानिहिल् क़दीम मिनश्शैतानिर्रजीम''।

''मैं अ़ज़मत वाले अल्लाह की और उस के करीम चेहरे की और उस के हमेशा से रहने वाले राज्य की पनाह चाहता हूँ मर्दूद शैतान से।'' {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और जब मस्जिद में दाख़िल होते तो यह दुआ़ पढ़ते:

«بِسْمِ اللهِ، وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللهِ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي، وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ».

''बिस्मिल्लाह, वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाह, अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़ुनूबी, वफ़्तह् ली अब्वाब रह्मतिक''।

''अल्लाह के नाम से (दाख़िल होता हूँ), और रसूलुल्लाह पर सलाम (शांति नाज़िल) हो। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।''

और जब निकलते तो पढ़ते:

«بِسْمِ اللهِ، وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُولِ اللهِ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي، وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ فَضْلِكَ». [صحيح النسائي وصحيح ابن ماجه للألباني]

''बिस्मिल्लाह, वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाह, अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़ुनूबी, वफ़्तह् ली अब्वाब फ़ज़्लिक''।

''अल्लाह के नाम से (निकलता हूँ), और रसूलुल्लाह पर सलाम (शांति नाज़िल) हो। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मेरे लिए अपने फ़ज़्ल व करम के दरवाज़े खोल दे।'' {अल्बानी रचित सहीह नसाई और सहीह इब्ने माजा}

और मस्जिद से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़ने की तर्ग़ीब दिलाते:

«اللّهُمَّ اعْصِمْنِي مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ». [صحيح ابن ماجه للألباني]

''अल्लाहुम्मअ़्सिम्नी मिनश्शैतानिर्रजीम''।

''ऐ अल्लाह! मुझे मर्दूद शैतान से बचा ले।'' {अल्बानी रचित सहीह इब्ने माजा}

नमाज़ में आप ﷺ
का तरीक़ा तथा निर्देशना

नमाज़ आप ﷺ की आँखों की ठंडक, राहत का ज़रीया और मुसीबत के वक़्त पनाह लेने की जगह थी। {बुख़ारी}

रसूलुल्लाह ﷺ जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने मुँह को मिस्वाक से साफ़ किया करते। {बुख़ारी}

और आप अपने सामने सुतरा के तौर पर नेज़ा रख देते और उस से क़रीब हो कर नमाज़ अदा फ़रमाते। और आप ने नमाज़ी को हुक्म दिया कि अपने सामने से गुज़रने वाले को रोके, गुज़रने न दे। {मुस्लिम}

और आप क़िब्ला रुख़ होते फिर अपने दोनों हाथों को दोनों कंधों के बराबर उठाते और उँगलीयों को कानों के लौ तक बढ़ाते तथा उन्हें क़िब्ला रुख़ करते हुये ‘अल्लाहु अक्बर’ कहते। {बुख़ारी}

फिर अपनी दायें हथेली को बायें के पीठ पर रख कर उसे सीने पर बाँधते। {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और अपनी निगाह को सज्दे की जगह में बनाये रखते, और उसे सज्दे की जगह से नहीं हटाते यहाँ तक कि नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते। {बैहक़ी और हाकिम, अल्बानी ने सहीह क़रार दिया है}

फिर यह दुआ (सना) पढ़ते:

«اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي مِنْ خَطَايَايَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ». [صحيح البخاري]

"अल्लाहुम्म बाइद बैनी व बैन ख़तायाय कमा बाअ़द्त बैनल् मश्रिक़ि वल्मग़रिबि, अल्लाहुम्म नक़्क़िनी मिन् ख़तायाय कमा युनक़्क़स सौबुल अब्यज़ु मिनद्दनसि, अल्लाहुम्मग़्सिल्नी मिन् ख़तायाय बिल्माइ वस्सल्जि वलबरदि।"

"ऐ अल्लाह! तू मेरे दरमियान तथा मेरे गुनाहों के दरमियान ऐसी दूरी कर दे जैसी दूरी तू ने पूरब और पच्छिम के दरमियान की है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से इस तरह पाक व साफ़ कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल कुचेल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से पानी, बरफ़ और ओलों से धुल दे।" {बुख़ारी}

और अल्लाह की पनाह माँगते हुये कहते:

«أَعُوذُ بِاللهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ». [صحيح أبي داود للألباني].

"अऊज़ु बिल्लाहिस् समीइल् अ़लीमि मिनश्शैतानिर्रजीम, मिन् हम्ज़िहि व नफ़्ख़िहि व नफ़्सिहि"।

"मैं सुनने और जानने वाले अल्लाह की पनाह लेता हूँ मर्दूद शैतान से, उस के वस्वसों से, उस के फूँकने (तकब्बुर) से और उस के अश्आ़र और जादू से।" {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

फिर आप आहिस्ता (आवाज़ ऊँची किये बिना) (بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' पढ़ते। {बुख़ारी}

और जब आप सूरतुल फ़ातिहा पढ़ते तो एक एक आयत कर के यूँ पढ़तेः

﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾.

पढ़ कर रुक जाते फिर पढ़तेः

﴿ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ﴾.

फिर रुकते और पढ़तेः

﴿مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ﴾.

ऐसा ही करते सूरह के अंत तक।

इसी तरह (दीगर सूरतों में भी) आप की क़िराअत यूँ होती कि आप हर आयत के अख़ीर में रुकते, बाद वाली आयत के साथ मिला कर नहीं पढ़ते। {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

नीज़ आप मद्द के साथ (खींच खींच कर) तिलावत फ़रमाते। {बुख़ारी}

और जब सूरतुल् फ़ातिहा से फ़ारिग़ होते तो अपनी आवाज़ को खींचते हुये आमीन बिल्जह्र करते (बआवाज़े बुलंद आमीन कहते)। और फ़रमाते कि जिस का आमीन कहना फ़रिश्तों के आमीन कहने के मुवाफ़िक़ होगा उस के पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। {बुख़ारी}

और फ़ातिहा के बाद फ़ज्र में तिवाले मुफ़स्सल से (सूरह क़ाफ़ से मुर्सलात तक) साठ से सौ आयत तक पढ़ते। {बुख़ारी} और कभी कभी तिवाले मुफ़स्सल के अ़लावा से भी पढ़ते। {मुस्लिम}

और जुमुआ़ के दिन फ़ज्र की पहली रकअ़त में सूरह सज्दा और दूसरी रकअ़त में सूरह दह्र् पढ़ते। {बुख़ारी}

और आप ज़ुह्र् की पहली दोनों रकअ़तों में तीस आयत की मिक़दार,

और आख़िर की दोनों रकअ़तों में पंद्रह आयतों की मिक़्दार या इस का आधा पढ़ा करते।

और अ़स्र की पहली दोनों रकअ़तों में पंद्रह आयतों की मिक़्दार और आख़िर की दोनों रकअ़तों में इस के आधे के बराबर पढ़ा करते। {मुस्लिम}

और कभी कभी ज़ुहूर् और अ़स्र की आख़िरी दोनों रकअ़तों में सिर्फ़ फ़ातिहा पर इक्तिफ़ा (बस) करते। {बुख़ारी}

और आप कभी कभी मुक़्तदीयों को आयतें सुनाया करते। {बुख़ारी}

और मग़्रिब की नमाज़ में कभी क़िसारे मुफ़स्सल (सूरह ज़ुहा से नास तक) से और कभी क़िसारे मुफ़स्सल के अ़लावा से पढ़ते जैसे सूरह तूर और सूरह आराफ़। {बुख़ारी}

और इ़शा की नमाज़ में अवासिते मुफ़स्सल (सूरह अ़म्म से सूरह लैल तक) से पढ़ते। {अल्बानी रचित सहीह नसाई}

और आप जब क़िराअत से फ़ारिग़ होते तो अपने दोनों हाथों को उठाते और अल्लाहु अक्बर कहते हुये रुकू में चले जाते। और अपनी दोनों हथेलीयों को अपने दोनों घुटनों पर इस तरह रखते गोया कि पकड़े हुये हैं, और उँगलीयों के बीच गेप रखते तथा अपनी कुहनीयों को पहलूओं से अलग रखते। और अपनी पीठ को बिछा कर बराबर कर लेते, अपने सर को न ऊँचा करते और न बराबर, बल्कि इस के बीच व बीच करते। और तीन मर्तबा कहते:

«سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ».

“सुब्हान रब्बियल अ़ज़ीम”।

“पाक है मेरा रब जो बड़ी अ़ज़्मत वाला है।”

और कभी तीन बार से ज़्यादा भी पढ़ते। और कभी इस के साथ यह दुआ़ भी बढ़ा देते:

«سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلاَئِكَةِ وَالرُّوحِ».

''सुब्बूहुन् कुद्दूसुन् रब्बुल् मलाइकति वर्रूह''।

''बहुत ही पाक और बड़ा मुक़द्दस है फ़रिश्तों और जिब्रील का रब।''

और कहते:

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي».

''सुब्हानकल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिक, अल्लाहुम्मग़फ़िर्ली''।

''ऐ अल्लाह हमारे रब! तू पाक है अपनी हम्द व सना के साथ, ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ कर दे।''

और इसे अपने रुकू और सज्दे में बकसरत पढ़ते।

आप ﷺ का इर्शाद है:

«أَلاَ وَإِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَقْرَأَ الْقُرْآنَ رَاكِعًا أَوْ سَاجِدًا، فَأَمَّا الرُّكُوعُ فَعَظِّمُوا فِيهِ الرَّبَّ، وَأَمَّا السُّجُودُ فَاجْتَهِدُوا فِي الدُّعَاءِ فَقَمِنٌ أَنْ يُسْتَجَابَ لَكُمْ». [صحيح مسلم].

''सुनो! मुझे रुकू और सज्दे की हालत में क़ुरआन पढ़ने से मना किया गया है। जहाँ तक रुकू का तअ़ल्लुक़ है तो उस में अपने रब की अ़ज़मत बयान करो, और सज्दे में पूरी कोशिश से (ख़ूब गिड़ गिड़ा कर) दुआ़ करो, तो ज़्यादा उम्मीद है कि तुम्हारी दुआ़यें क़बूल की जायें।'' {मुस्लिम}

फिर आप (سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ) 'समिअ़ल्लाहु लिमन् हमिदह' (सुन ली अल्लाह ने उस की जिस ने उस की तारीफ़ की) कहते हुये रुकु से उठते। और बराबर (सीधा खड़ा) होते वक़्त अपने दोनों हाथों को उठाते तथा खड़े हो कर कहते:

«رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ».

''रब्बना व लकल् हम्द''।

''ऐ हमारे रब! और तेरे ही लिए तारीफ़ है।''

और कभी 'वाव' के बिना यूँ कहते:

«رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ».

''रब्बना लकल् हम्द''।

''ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए तारीफ़ है।''

और कभी शुरू में 'अल्लाहुम्म' बढ़ा कर 'वाव' के साथ इस तरह कहते:

«اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ».

''अल्लाहुम्म रब्बना व लकल् हम्द''।

''ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए तारीफ़ है।''

और कभी शुरू में 'अल्लाहुम्म' बढ़ा कर 'वाव' के बिना इस तरह कहते:

«اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ».

''अल्लाहुम्म रब्बना लकल् हम्द''।

''ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! और तेरे ही लिए तारीफ़ है।''

आप का इर्शादे गिरामी है:

«إِذَا قَالَ الإِمَامُ سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ». [صحيح البخاري].

''जब इमाम 'समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह' (सुन ली अल्लाह ने उस की जिस

ने उस की तारीफ़ की) कहे तो तुम लोग कहोः 'अल्लाहुम्म रब्बना लकल् हम्द' 'ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए तारीफ़ है।' क्योंकि जिस का कहना फ़रिश्तों के कहने के मुवाफ़िक़ हो जाये उस के पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।'' {बुख़ारी}

और आप ने उस आदमी का इक़रार किया जिस ने 'अल्लाहुम्म रब्बना लकल् हम्द' के बाद कहाः

«حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ».

''हम्दन कसीरन तैयिबम मुबारकन फ़ीह''।

''बहुत ज़्यादा, पाकीज़ा, बाबरकत तारीफ़।''

और फ़रमाया किः

«رَأَيْتُ بِضْعَةً وَثَلاثِينَ مَلَكًا يَبْتَدِرُونَهَا أَيُّهُمْ يَكْتُبُهَا أَوَّلاً». [صحيح البخاري].

''मैं ने तीस से अधिक फ़रिश्तों को देखा कि वह इस की तरफ़ जल्दी कर रहे हैं कि उन में से कौन इसे पहले लिख ले जाये।'' {बुख़ारी}

और कभी इस के साथ यह भी इज़ाफा फ़रमातेः

«مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ». [صحيح مسلم].

''मिलअस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मिल्अ मा शि'त मिन् शैइम् बा'दु''।

''आसमानों तथा ज़मीन के बराबर और जो कुछ तु इस के बाद चाहे उस के बराबर।'' {मुस्लिम}

फिर 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुये सज्दे में चले जाते। और अपनी नाक तथा पेशानी को ज़मीन पर टिका देते। और अपनी दोनों हथेलीयों को बिछा कर उन पर टेक लगाते, और उँगलीयों को मिला कर उन्हें क़िब्ला की

तरफ़ करते हुये कंधों के बराबर और कभी कान के बराबर रखते। नीज़ अपने घुटनों तथा पैर के किनारों को भी ज़मीन पर इस तरह टिका देते कि उँगलीयों के किनारे क़िब्ला रुख़ होते। और अपने रानों तथा पिंडलीयों के दरमियान नीज़ रानों तथा पेट के दरमियान गेप रखते। और अपने दोनों बाज़ू को अपने पहलूओं से अलग रखते, यहाँ तक कि पीछे से आप के बग़लों की सफ़ेदी नज़र आने लगती।

और आप अपने सज्दे में तीन बार और कभी इस से अधिक यह दुआ़ पढ़ते:

«سُبْحَانَ رَبِّيَ الأَعْلَى». [صحيح البخاري].

“सुब्हान रब्बियल आ़‘ला”।

“पाक है मेरा रब जो सब से बुलंद है।” {बुख़ारी}

और वह अज़्कार भी पढ़ते जिन का उल्लेख हम ने रुकू के अज़्कार के ज़िम्न में किया है। नीज़ निम्नोक्त दुआ़यें भी पढ़ते:

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ: دِقَّهُ وَجِلَّهُ، وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ، وَعَلانِيَتَهُ وَسِرَّهُ». [صحيح مسلم].

“अल्लहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी कुल्लहु: दिक़्क़हु व जिल्लहु, व अव्वलहु व आख़िरहु, व अ़लानियतहु व सिर्रहु”।

“ऐ अल्लाह! मेरे तमाम छोटे बड़े, अगले पिछले और ज़ाहिरी व बातिनी गुनाह माफ़ फ़रमा दे।” {मुस्लिम}

«اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، تَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ». [صحيح مسلم].

“अल्लाहुम्म लक सजद्तु, व बिक आमन्तु, व लक अस्लम्तु, सजद वज्हिय लिल्लज़ी ख़लक़हु व सव्वरहु, व शक़्क़ सम्अ़हु व बसरहु, तबारकल्लाहु अह्सनुल् ख़ालिक़ीन”।

‘‘ऐ अल्लाह! मैं ने तेरे ही लिए सज्दा किया, तेरे ऊपर ईमान लाया, तेरे लिए इस्लाम लाया, मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सज्दा किया जिस ने उसे पैदा किया, उस की सूरत बनाई, कानों में सूराख़ बनाये और आँखों में शिगाफ़ बनाये। बरकत वाला है अल्लाह जो बनाने वालों में सब से बेहतर है।’’ {मुस्लिम}

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ، لاَ أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ». [صحيح مسلم].

‘‘अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़जु बिरिज़ाक मिन् सख़तिक, व बिमुआ़फ़तिक मिन् उक़ूबतिक, व अऊ़जु बिक मिन्क, ला उह्सी सनाअन् अ़लैक, अन्त कमा अस्नैत अ़ला नफ़्सिक’’।

‘‘ऐ अल्लाह! मैं तेरी रिज़ा के ज़रीये से तेरी नाराज़ी से, और तेरी आ़फ़ियत के ज़रीये से तेरी सज़ा से, और तेरी ज़ात के ज़रीये से तेरे क़ह्र् व ग़ज़ब से पनाह मांगता हूँ। मैं तेरी तारीफ़ का शुमार नहीं कर सकता, तू वैसा ही है जैसे तू ने ख़ुद अपनी तारीफ़ बयान की है।’’ {मुस्लिम}

और आप ﷺ का इर्शाद है:

«أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ، فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ». [صحيح مسلم].

‘‘बंदा अपने रब के सब से ज़्यादा क़रीब उस वक़्त होता है जब वह सज्दे में होता है, लिहाज़ा तुम (सज्दे में) ख़ूब दुआ़ किया करो।’’ {मुस्लिम}

फिर ‘अल्लाहु अक्बर’ कहते हुये अपने सर को उठाते यहाँ तक कि बराबर बैठ जाते। और बैठने का तरीक़ा यह होता: अपने बायें पैर को बिछा कर उस पर बैठते तथा अपने दायें पैर को खड़ा रख कर उस की उँगलीयों को क़िब्ला रुख़ कर देते, और अपने दोनों हथेलीयों को अपने रानों या घुटनों पर रखते, और यह दुआ़ पढ़ते:

«رَبِّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي، وَاجْبُرْنِي، وَارْفَعْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي، وَارْزُقْنِي».

[صحيح أبي داود والترمذي للألباني].

''रब्बिग़फ़िर्ली, वर्हम्नी, वज्बुर्नी, वर्फ़अ्नी, वह्दिनी,, व आ़फ़िनी, वर्ज़ुक़्नी''।

''ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ कर दे, मुझ पर रहम फ़रमा (दया कर), मेरे नुक़सान पूरे फ़रमा, मुझे बुलंद फ़रमा, मुझे हिदायत दे, मुझे आ़फ़ियत (कल्याण) में रख और मुझे रिज़्क़ अ़ता (जीविका प्रदान) कर।'' {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद व तिरमिज़ी}

और कभी पढ़तेः

«رَبِّ اغْفِرْ لِي، رَبِّ اغْفِرْ لِي». [صحيح ابن ماجه للألباني].

''रब्बिग़फ़िर्ली, रब्बिग़फ़िर्ली''।

''ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ कर दे, ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ कर दे।'' {अल्बानी रचित सहीह इब्नु माजा}

और आप दोनों सज्दे के दरमियान के जल्सा (बैठक) को लगभग सज्दा की मिक़दार लंबी फ़रमाते। फिर दूसरा सज्दा करते और उस में वह कुछ करते जो पहले सज्दा में किये थे, फिर दूसरी रकअ़त के लिए खड़े होते।

तशह्हुद में आप के बैठने की कैफ़ियतः आप अपनी दायें हथेली को अपने दायें रान पर या घुटने पर रखते। और अपनी शहादत उँगली (तर्जनी) के अ़लावा सारी उँगलीयों को बंद कर लेते या अंगूठा तथा मध्यमा (बीचली उँगली) के बीच हलक़ा कर लेते, और उस (शहादत उँगली) को हिलाते हुये और दुआ़ करते हुये उस के ज़रीया क़िब्ला की तरफ़ इशारा फ़रमाते, और उसी पर अपनी निगाह टिकाये रखते। और अपनी बायें हथेली को अपने बायें रान पर बिछाये रखते। और तशह्हुद पढ़ते।

और तशह्हुद के अल्फ़ाज़ मुख़्तलिफ़ हैं, उन में से:

«التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ، وَالصَّلَوَاتُ، وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ الله وَبَرَكَاتُهُ، السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ الله الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ». [صحيح البخاري].

"अत्तहिय्यातु लिल्लाहि, वस्सलवातु वत्तय्यिबातु, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इ़बादिल्लाहिस्सालिहीन, अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह, व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहु व रसूलुहु"।

''सारी जुबानी, बदनी और माली इबादतें सिर्फ अल्लाह के लिए हैं। ऐ नबी! आप पर सलामती नाज़िल हो, और अल्लाह की रहमतें तथा उस की बरकतें अवतारित हो, और सलामती हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं है, और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उस के बन्दे और उस के रसूल हैं।'' {बुख़ारी}

फिर दुरूद पढ़ते। और दुरूद के अल्फ़ाज़ भी मुख़्तलिफ़ वारिद हुये हैं, उन में से:

«اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ. اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ». [صحيح البخاري]

''अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद, अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद।''

“ऐ अल्लाह! कृपा (रहमत) भेज मुहम्मद पर और मुहम्मद के आल (परिवार) पर जैसे रहमत भेजी तू ने इब्राहीम पर और इब्राहीम के आल (परिवार) पर, बेशक तू महिमा और गुणगान के योग्य (बुज़ुरगी और तारीफ़ के लायेक़) है। ऐ अल्लाह! बरकत भेज मुहम्मद पर और मुहम्मद के परिवार पर, जैसे बरकत भेजी तू ने इब्राहीम पर और इब्राहीम के परिवार पर, बेशक तू महिमा और गुणगान के योग्य (बुज़ुरगी और तारीफ़ के लायेक़) है।” {बुख़ारी}

और जब आप ﷺ तीसरी रकअ़त के लिए खड़े होते तो अल्लाहु अक्बर कहते और रफ़्ए यदैन करते (दोनों हाथों को उठाते)।

और जब आख़िरी तशह्हुद के लिए बैठते तो वही चीज़ें करते जो पहले तशह्हुद में किये होते, मगर सिर्फ़ बैठने में तवर्रुक का तरीक़ा अपनाते यानी अपने दायें पैर को खड़ा कर देते और अपने बायें पैर को अपने रान तथा पिंडली के नीचे कर देते, और फ़रमाते कि जब तुम में कोई तशह्हुद से फ़ारिग़ हो जाये तो चार चीज़ों से अल्लाह की पनाह मांगते हुये कहे:

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ، وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ». [صحيح مسلم].

“अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबिक मिन् अ़ज़ाबि जहन्नम, व मिन् अ़ज़ाबिल क़ब्रि, व मिन् फ़ित्नतिल् मह्या वल्ममात, व मिन् फ़ित्नतिल् मसीहिद्दज्जाल।”

“ऐ अल्लाह! तेरी पनाह तथा शरण चाहता हूँ जहन्नम के अ़ज़ाब से, और क़ब्र के अज़ाब से, और ज़िंदगी तथा मौत के फ़ितने से और मसीह दज्जाल के फितने से।” {मुस्लिम}

फिर जो चाहे अपने नफ़्स की भलाई के लिए दुआ़ करे। और आप ने अबू बक्र رضي الله عنه को तालीम दी कि वह यह दुआ़ पढ़े:

«اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا، وَلاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ، وَارْحَمْنِي، إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ». [صحيح البخاري]

''अल्लाहुम्म इन्नी ज़लमतु नफ़्सी ज़ुल्मन् कसीरा, व ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त, फ़ग़्फ़िर् ली मग़्फ़िरतम् मिन् इन्दिक, वर्हम्नी, इन्नक अन्तल् ग़फ़ूरुर् रहीम''।

''ऐ अल्लाह! मैं ने अपने नफ़्स पर बहुत ज़ुल्म किया है, और गुनाहों को तेरे सिवा कोई माफ़ करने वाला नहीं, पस तू अपनी ख़ास मग़फ़िरत से मुझे बख़्श दे, और मुझ पर रहमत फ़रमा, बेशक तू बहुत बख़्शने वाला निहायत मेहेरबान है।'' {बुख़ारी}

नीज़ आप ﷺ ने हर नमाज़ के आख़िर में मुआज़ رضي الله عنه यह दुआ पढ़ने की वसीयत की:

«اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ». [صحيح أبي داود للألباني].

''अल्लाहुम्म अइन्नी अ़ला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि इ़बादतिक''।

''ऐ अल्लाह! मेरी मदद फ़रमा इस बात पर कि मैं तेरा ज़िक्र, तेरा शुक्र और तेरी अच्छी इबादत करूँ।'' {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और आप ﷺ दौराने तशह्हुद सब से आख़िर में सलाम फेरने से पहले पढ़ते:

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، وَمَا أَسْرَفْتُ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ». [صحيح مسلم].

''अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली मा क़द्दम्तु व मा अख़्ख़र्तु, व मा अस्रर्तु व मा आ'लन्तु, व मा अस्रफ़्तु, व मा अन्त आ'लमु बिहि मिन्नी, अन्तल् मुक़द्दिमु, व अन्तल् मुअख़्ख़िरु, ला इलाह इल्ला अन्त''।

''ऐ अल्लाह! मेरे वह गुनाह माफ़ फ़रमा दे जो मैं ने पहले किये और वह

भी जो बाद में किये, वह भी जो छुप कर किये और वह भी जो अ़लानिया (प्रकाश्य) किये, और वह जो मैं ने ज़्यादती की, और वह गुनाह भी जिन को तू मुझ से ज़्यादा जानता है, तू ही आगे बढ़ाने वाला और तू पीछे करने वाला है, तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं।'' {मुस्लिम}

फिर आप ﷺ (السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ) 'अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह' कहते हुये अपनी दायें तरफ़ सलाम फेरते यहाँ तक कि आप के दायें रुख़सार की सफ़ेदी नज़र आ जाती। और फिर (السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ) 'अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह' कहते हुये अपनी बायें तरफ़ सलाम फेरते यहाँ तक कि आप के बायें रुख़सार की सफ़ेदी नज़र आ जाती।

और सलाम फेरने के बाद तीन बार (أَسْتَغْفِرُ اللهَ) 'अस्तग़फ़िरुल्लाह' अर्थात 'मैं अल्लाह से मग़फ़िरत (क्षमा) तलब करता हूँ' कहते। फिर निम्नलिखित दुआ़यें पढ़ते:

«اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلاَمُ، وَمِنْكَ السَّلاَمُ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ». [صحيح مسلم].

''अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम, व मिन्कस्सलाम, तबारक्त या ज़ल्जलालि वल्इक्राम''।

''ऐ अल्लाह! तू तमाम ऐबों से सुरक्षित तथा महफ़ूज़ है, और तुझ ही से सलामती है। ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले! तू बड़ी बरकत वाला है।'' {मुस्लिम}

«لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ».

[صحيح البخاري].

''ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु, व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर। अल्लाहुम्म ला मानिअ़ लिमा आ'तैत, व ला मुअ़्तिय लिमा मनअ़्त, व ला यन्फ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल्जद्द।''

''अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही और उसी के लिए तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर (क्षमताशील) है। ऐ अल्लाह! तू जो चीज़ प्रदान करे उस को कोई रोकने वाला नहीं, और जिस को तू रोक ले उस को कोई देने वाला नहीं, किसी मालदार को उस की मालदारी फ़ायदा नहीं पहुँचा सकती और तुझ से बचा नहीं सकती।'' {बुख़ारी}

«لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ. لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله، وَلاَ نَعْبُدُ إِلاَّ إِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله، مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ، وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ». [صحيح مسلم].

''ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु, व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह। ला इलाह इल्लल्लाहु, व ला नअ़्बुदु इल्ला इय्याहु, लहुन्निअ़्मतु व लहुल्फ़ज़्लु व लहुस्सनाउल हसन। ला इलाह इल्लल्लाहु मुख़लिसीन लहुद्दीन व लौ करिहल् काफ़िरून।''

''अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही और उसी के लिए तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर (क्षमताशील) है। गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ और नेकी करने की कुव्वत व शक्ति अल्लाह ही से हासिल होती है। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं, उसी के लिए नेमत, उसी के लिए फ़ज़्ल व कृपा तथा उसी के लिए अच्छी तारीफ़ व स्तुति सज़ावार (लाइक़ व योग्य) है। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, हम उस के लिए अपने दीन को ख़ालिस (इताअ़त व फ़र्माबर्दारी को अविमिश्र) करने वाले हैं, अगरचे (यद्यपि) काफ़िरों को नापसंद हो।'' {मुस्लिम}

«رَبِّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ». [صحيح مسلم].

“रब्बि क़िनी अ़ज़ाबक यौम तब्अ़सु इबादक”।

“ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन अपने अ़ज़ाब से बचाना जिस दिन तू अपने बंदों को (ज़िंदा कर के) उठायेगा।” {मुस्लिम}

और आप ने अपनी उम्मत को निम्नोक्त ज़िक्र की तर्ग़ीब दिलाते हुये फ़रमाया कि जो उसे पढ़ेगा उस का बदला यह है कि उस के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे अगर चे समंदर की झाग के बराबर हो।

तेंतीस मर्तबा (سُبْحَانَ اللهِ) ‘सुब्हानल्लाह’ यानी ‘मैं अल्लाह की पाकीज़गी व पवित्रता बयान करता हूँ’। और तेंतीस मर्तबा (الْحَمْدُ لِلَّهِ) ‘अल्हम्दु लिल्लाह’ यानी ‘सब तारीफ़ व स्तुति अल्लाह के लिए हैं’। तथा तेंतीस मर्तबा (اللهُ أَكْبَرُ) ‘अल्लाहु अक्बर’ यानी ‘अल्लाह सब से बड़ा (सर्वमहान) है’। और सौ की गिनती पूरी करते हुए पढ़े:

«لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ».

[صحيح مسلم].

“ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु, व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर।”

“अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही और उसी के लिए तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।” {मुस्लिम}

और आप ﷺ ज़िक्र के साथ अपनी आवाज़ को बुलंद फ़रमाते, और तस्बीह अपने हाथ से किया करते।

आयतुल कुर्सी के संबंध में आप ﷺ का इर्शाद है:

«مَنْ قَرَأَ آيَةَ الْكُرْسِيِّ دُبُرَ كُلِّ صَلاَةٍ مَكْتُوبَةٍ لَمْ يَمْنَعْهُ مِنْ دُخُولِ الْجَنَّةِ إِلاَّ أَنْ يَمُوتَ».

[صححه الألباني في صحيح الجامع].

"जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ेगा उस को जन्नत में दाख़िल होने से सिवाय मौत के कोई चीज़ नहीं रोकेगी।" {इस हदीस को अल्बानी ने सहीहुल् जामेअ् में सहीह क़रार दिया है।}

और आप ने हर नमाज़ के बाद सूरह 'इख़लास', सूरह 'फ़लक़' और सूरह 'नास' पढ़ने का हुक्म दिया है।

और आप फ़ज्र में सलाम फेरने के बाद यह दुआ पढ़ते:

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا طَيِّبًا، وَعَمَلاً مُتَقَبَّلاً». [صحيح ابن ماجه للألباني].

"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नफ़ा बख़्श इल्म, पाकीज़ा रोज़ी और क़बूल होने वाले अ़मल का सवाल करता हूँ।" {अल्बानी रचित सहीह इब्नु माजा}

और आप ﷺ का इर्शाद है:

«مَنْ قَالَ قَبْلَ أَنْ يَنْصَرِفَ وَيُثْنِيَ رِجْلَيْهِ مِنْ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ وَالصُّبْحِ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، عَشْرَ مَرَّاتٍ، كَتَبَ اللهُ لَهُ بِكُلِّ وَاحِدَةٍ عَشْرَ حَسَنَاتٍ، وَمَحَا عَنْهُ عَشْرَ سَيِّئَاتٍ، وَرَفَعَ لَهُ عَشْرَ دَرَجَاتٍ، وَكَانَتْ حِرْزًا مِنْ كُلِّ مَكْرُوهٍ، وَحِرْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، وَلَمْ يَحِلَّ لِذَنْبٍ أَنْ يُدْرِكَهُ إِلاَّ الشِّرْكُ، وَكَانَ مِنْ أَفْضَلِ النَّاسِ عَمَلاً، إِلاَّ رَجُلاً يَفْضُلُهُ، يَقُولُ أَفْضَلَ مِمَّا قَالَ». [حسنه لغيره الألباني في صحيح الترغيب].

"जो शख़्स मग़्रिब और फ़ज्र की नमाज़ के (सलाम फेरने के) बाद जाय नमाज़ से उठने तथा (तशह्हुद की कैफ़ियत से दूसरी कैफ़ियत की तरफ़) अपना पैर मोड़ने से पहले दस मर्तबा यह कहे: 'ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु, युह्ई व युमीतु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर।' (अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही और उसी के लिए तारीफ़ है, वही जिलाता तथा मारता है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।)

तो अल्लाह तआ़ला उस के लिए हर एक के बदले दस नेकीयाँ लिखता है, और उस से दस गुनाह माफ़ फ़रमाता है, उस के लिए दस दर्जे बुलंद करता है, और यह उस के लिए हर आफ़त व मुसीबत तथा मर्दूद शैतान से बचाव व हिफ़ाज़त का ज़रीया हो जाता है, और शिर्क के अ़लावा कोई गुनाह ऐसा नहीं जो उस को हलाक करे तथा उस के अ़मल को बर्बाद करे, और वह अ़मल के एतिबार से लोगों में सब से अफ़ज़ल है, मगर वह शख़्स जो उस से ज़्यादा तथा उस से बेहतर पढ़े।" {अल्बानी ने इसे सहीहुत्तर्ग़ीब में हसन लिग़ैरिहि क़रार दिया है}

और रसूलुल्लाह ﷺ पाँचों नमाज़ों पर मुहाफ़ज़त (हमेशगी) बरतते हुये फ़रमाते कि अल्लाह तआ़ला ने दिन व रात में इन्हें अपने बंदों पर फ़र्ज़ किया है, और यह कि वह इन के ज़रीया गुनाहों को मिटाता है। {बुख़ारी}

नीज़ आप का फ़रमान है कि जो शख़्स इन नमाज़ों को कामिल वुज़ू, खुशू खुज़ू और रुकू के साथ अदा करे, तो यह उस के लिए उस के पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कि वह कबीरा गुनाह का इर्तिकाब न करे। {मुस्लिम}

और आप ने यह ख़बर दी कि जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस ने कुफ़्र किया। {अल्बानी रचित सहीह नसाई}

और आप ने मस्जिद में जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने की तर्ग़ीब देते हुये फ़रमायाः

«صَلاَةُ الرَّجُلِ فِي جَمَاعَةٍ تُضَعَّفُ عَلَى صَلاَتِهِ فِي بَيْتِهِ وَفِي سُوقِهِ خَمْسًا وَعِشْرِينَ ضِعْفًا، وَذَلِكَ أَنَّهُ إِذَا تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ ثُمَّ خَرَجَ إِلَى الْمَسْجِدِ، لاَ يُخْرِجُهُ إِلاَّ الصَّلاَةُ، لَمْ يَخْطُ خَطْوَةً إِلاَّ رُفِعَتْ لَهُ بِهَا دَرَجَةٌ، وَحُطَّتْ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةٌ، فَإِذَا صَلَّى لَمْ تَزَلِ الْمَلاَئِكَةُ تُصَلِّي عَلَيْهِ مَا دَامَ فِي مُصَلاَّهُ، مَا لَمْ يُحْدِثْ، تَقُولُ: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ، اللَّهُمَّ ارْحَمْهُ. وَلاَ يَزَالُ فِي صَلاَةٍ مَا انْتَظَرَ الصَّلاَةَ». [متفقٌ عليه].

“आदमी का जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना, अपने घर और बाज़ार में नमाज़ पढ़ने से पचीस गुना ज़्यादा (अज्र व सवाब का बाइस) है। और यह इस लिए है कि जब आदमी वुज़ू करे और अच्छे तरीक़े से वुज़ू करे, फिर मस्जिद की तरफ़ जाये, और मस्जिद की तरफ़ जाने से उस का मक़सद सिवाय नमाज़ के कोई और चीज़ न हो, तो यह जो क़दम भी उठायेगा उस के ज़रीये से उस का एक दरजा बुलंद और एक गुनाह माफ़ होगा। फिर जब नमाज़ पढ़ लेगा तो जब तक बावुज़ू अपनी जाय नमाज़ पर बेठा रहेगा, फ़रिश्ते उस के लिए दुआ़ करते रहेंगे। फ़रिश्ते कहते हैं: ऐ अल्लाह! उस पर रहमत फ़रमा। ऐ अल्लाह! उस पर मेहेरबान हो जा। और जब तक वह नमाज़ का इंतिज़ार करता है, वह बराबर नमाज़ ही में रहता है।” {बुख़ारी व मुस्लिम}

और आप ने उन लोगों के घरों को जला देने का इरादा फ़रमाया जो मस्जिद में हाज़िर हो कर जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा नहीं करते हैं। {मुस्लिम}

और आप ﷺ ने फ़रमाया:

«مَنْ صَلَّى الْعِشَاءَ فِي جَـمَاعَةٍ، فَكَأَنَّمَا قَامَ نِصْفَ اللَّيْلِ، وَمَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فِي جَمَاعَةٍ، فَكَأَنَّمَا صَلَّى اللَّيْلَ كُلَّهُ». [صحيح مسلم].

“जिस ने जमाअ़त से इ़शा की नमाज़ पढ़ी तो उस ने गोया आधी रात क़ियाम किया (अल्लाह की इ़बादत की)। और जिस ने सुबह की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ी तो उस ने गोया सारी रात नमाज़ पढ़ी।” {मुस्लिम}

नीज़ आप ने यह भी ख़बर दी कि अ़स्र और फ़ज्र पढ़ने वाला जन्नत में दाख़िल होगा। {बुख़ारी}

और आप ﷺ सुनने रवातिब (मुअक्कदा सुन्नतों) की पाबंदी किया करते। इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं:

«حَفِظْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ عَشْرَ رَكَعَاتٍ: رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الظُّهْرِ، وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَهَا،

وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ فِي بَيْتِهِ، وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعِشَاءِ فِي بَيْتِهِ، وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلاَةِ الصُّبْحِ». [صحيح البخاري].

"मुझे नबी ﷺ से दस रकअ़तें याद हैं: ज़ुहूर से पहले दो रकअ़त और उस के बाद दो रकअ़त, मग़रिब के बाद अपने घर में दो रकअ़त, इ़शा के बाद अपने घर में दो रकअ़त, और फ़ज्र की नमाज़ से पहले दो रकअ़त।" {बुख़ारी}

और बसा औक़ात आप अपने घर में ज़ुहूर से पहले चार रकअ़तें पढ़ते।

और आप मग़रिब की सुन्नत में सूरह काफ़िरून और सूरह इख़लास पढ़ा करते। और कभी यह दोनों सूरतें फ़ज्र की सुन्नत में भी पढ़ते। और कभी फ़ज्र की पहली रकअ़त में पढ़ते:

﴿قُولُوٓاْ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡنَا وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ وَيَعۡقُوبَ وَٱلۡأَسۡبَاطِ وَمَآ أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَآ أُوتِيَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمۡ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّنۡهُمۡ وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ﴾ [البقرة: ١٣٦]

"(ऐ मुसलमानो!) तुम सब कहो कि अल्लाह पर ईमान लाये और उस चीज़ पर भी जो हमारी तरफ़ उतारी गई, और जो चीज़ इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक़, याकूब और उन की औलाद पर उतारी गई, और जो कुछ अल्लाह की जानिब से मूसा और ईसा और दूसरे अम्बिया दिये गये। हम उन में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, हम अल्लाह के फ़रमा बर्दार हैं।" {अल्बक़रा: १३६}

और दूसरी रकअ़त में पढ़ते:

﴿قُلۡ يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ تَعَالَوۡاْ إِلَىٰ كَلِمَةٖ سَوَآءِۭ بَيۡنَنَا وَبَيۡنَكُمۡ أَلَّا نَعۡبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا نُشۡرِكَ بِهِۦ شَيۡـٔٗا وَلَا يَتَّخِذَ بَعۡضُنَا بَعۡضًا أَرۡبَابٗا مِّن دُونِ ٱللَّهِۚ فَإِن تَوَلَّوۡاْ فَقُولُواْ ٱشۡهَدُواْ بِأَنَّا مُسۡلِمُونَ﴾ [آل عمران: ٦٤]

‘‘आप कह दीजिये कि ऐ अह्ले किताब! ऐसी इंसाफ़ वाली बात की तरफ़ आओ जो हम में और तुम में बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत न करें, न किसी को उस के साथ शरीक बनायें, न अल्लाह को छोड़ कर आपस में एक दूसरे ही को रब बनायें। पस अगर वह मुँह फेर लें तो तुम कह दो कि गवाह रहो हम तो मुसलमान हैं।’’ {आलि इम्रानः ६४}

आप चाश्त की नमाज़ पढ़ते। और आप ने अबू हुरैरा رضي الله عنه को इस की वसीयत करते हुये ख़बर दी कि यह बदन के जोड़ों पर रोज़ाना सदक़ा करने की तरफ़ से काफ़ी हो जाती है यानी तीन सौ सदक़े के बराबर है।

और अ़स्र से पहले दो दो रकअ़त कर के चार रकअ़त पढ़ा करते। आप का इर्शाद हैः

«رَحِمَ اللهُ مَنْ صَلَّى قَبْلَ الْعَصْرِ أَرْبَعًا». [صحيح أبي داود للألباني].

‘‘अल्लाह रहम फ़रमाये उस शख़्स पर जो अ़स्र से पहले चार रकअ़त पढ़ता है।’’ {अलबानी रचित सहीह अबू दाऊद}

सुबह व शाम के अज़्कार में नबी ﷺ का तरीक़ा और निर्देशना

आप ﷺ जब फ़ज्र की नमाज़ पढ़ लेते तो सूरज तुलू (उदय) होने तक अपनी जाय नमाज़ में बैठ कर ज़िक्र व अज़्कार में मशगूल रहते। {मुस्लिम}

और आप जब सुबह करते तो पढ़तेः

«اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا، وَبِكَ أَمْسَيْنَا، وَبِكَ نَحْيَا، وَبِكَ نَمُوتُ، وَإِلَيْكَ النُّشُورُ».

''अल्लाहुम्म बिक अस्बह्ना व बिक अम्सैना व बिक नह्या व बिक नमूतु व इलैकन् नुशूर''।

''ऐ अल्लाह! तेरे ही हुक्म से हम ने सुबह की और तेरे ही हुक्म से हमारी शाम होती है, तेरे ही हुक्म से हम जीवित रहते हैं और तेरे ही हुक्म से हम मरेंगे, तथा तेरी ही ओर लौट कर जाना है।''

शाम के वक़्त आगे पीछे कर के यूँ ''अल्लाहुम्म बिक अम्सैना व बिक अस्बह्ना'' कहे, और ''व इलैकन् नुशूर'' के बदले ''व इलैकल् मसीर'' कहे। {सिल्सिला सहीहा}

«أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ للهِ وَالْحَمْدُ للهِ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٍ، رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذَا الْيَوْمِ

وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِي هَذَا الْيَوْمِ وَمِنْ شَـرِّ مَا بَعْدَهُ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ، وَسُوءِ الْكِبَرِ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ».

[صحيح مسلم].

''अस्बह्ना व अस्बहल् मुल्कु लिल्लाह वल्हम्दु लिल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर, रब्बि अस्अलुक ख़ैर मा फ़ी हाज़ल् यौमि व ख़ैर मा बअ्दहु, व अऊज़ु बिक मिन शर्रि मा फ़ी हाज़ल् यौमि व मिन शर्रि मा बअ्दहु, रब्बि अऊज़ु बिक मिनल् कसलि व सूइल् किबर, रब्बि अऊज़ु बिक मिन् अ़ज़ाबिन् फ़िन्नारि व अ़ज़ाबिन् फ़िल्क़ब्र''।

''हम ने सुबह की और अल्लाह के मुल्क ने सुबह की, और तमाम तारीफ़ (प्रशंसा) अल्लाह के लिए है, अल्लाह के अ़लावा कोई सत्य माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक व साझी नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ मेरे रब! इस दिन में जो भलाई है और जो इस के बाद में भलाई है मैं तुझ से उस का सवाल करता हूँ, और इस दिन की बुराई से तथा इस के बाद की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब! मैं सुस्ती और बुढ़ापे की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब! मैं जहन्नम के अ़ज़ाब और क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ।'' {मुस्लिम}

«أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الإِسْلاَمِ وَعَلَى كَلِمَةِ الإِخْلاَصِ، وَعَلَى دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ ﷺ وَعَلَى مِلَّةِ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ». [صحيح الجامع].

''अस्बह्ना अ़ला फ़ित्रतिल् इस्लामि व अ़ला कलिमतिल् इख़्लास, व अ़ला दीनि नबिय्यिना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम व अ़ला मिल्लति अबीना इब्राहीम हनीफ़म् मुस्लिमा, व मा कान मिनल् मुश्रिकीन''।

''हम ने इस्लाम की फ़ित्रत तथा इख़्लास के कलिमा और मुहम्मद ﷺ के

दीन और अपने बाप इब्राहीम عليه السلام की मिल्लत पर सुबह की जो एक तरफ़ा ख़ालिस मुसलमान थे, और मुश्रिकों में से नहीं थे।'' {सहीहुल् जामेअ्}

और शाम के वक़्त ''अस्बह्ना'' की जगह ''अम्सैना'' कहते।

और आप सुबह और शाम को ज़ैल की दुआ पढ़ना छोड़ते नहीं थे:

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ، وَأَهْلِي وَمَالِي، اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي، وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ، وَمِنْ خَلْفِي، وَعَنْ يَمِينِي، وَعَنْ شِمَالِي، وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي. [صحيح ابن ماجه للألباني].

''अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् अ़फ़्व वल्आ़फ़ियत फ़िद्दुन्या वल्आख़िरह, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् अ़फ़्व वल्आ़फ़ियत फ़ी दीनी व दुन्याय, व अह्ली व माली, अल्लाहुम्मस्तुर औ़राती व आमिन् रौआ़ती, अल्लाहुम्मह्फ़ज़्नी मिम्बैनि यदैय, व मिन् ख़ल्फ़ी, व अ़न् यमीनी, व अ़न् शिमाली, व मिन् फ़ौक़ी, व अऊ़ज़ु बिअ़ज़्मतिक अन् उग़्ताला मिन् तह्ती''।

''ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत में माफ़ी और आ़फियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने परिवार और अपने माल में माफ़ी तथा आ़फ़ियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरी पर्दा वाली चीज़ों पर पर्दा डाल दे और मेरी घबराहटों को अम्न में रख। ऐ अल्लाह! मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरी दायें तरफ़ से, मेरी बायें तरफ़ से और मेरे ऊपर से मेरी हिफ़ाज़त कर। और मैं इस बात से तेरी अ़ज़्मत व बड़ाई की पनाह चाहता हूँ कि अचानक अपने नीचे से हलाक किया जाऊँ।'' {अल्बानी रचित सहीह इब्नु माजा}

और सुबह तथा शाम को यह दुआ तीन मर्तबा पढ़ते:

«اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي، لاَ إِلَهَ

إِلاَّ أَنْتَ. اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِـنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ».

"अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फ़ी बदनी, अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फ़ी समूई, अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फ़ी बसरी, ला इलाह इल्ला अन्त। अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् कुफ़्रि वल्फ़क़्र, व अऊज़ु बिक मिन् अ़ज़ाबिल् क़ब्र, ला इलाह इल्ला अन्त"।

"ऐ अल्लाह! मुझे मेरे जिस्म में आ़फ़ियत दे, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे कानों में आ़फ़ियत दे, ऐ अल्लाह! मुझे मेरी आँखों में आ़फ़ियत दे, तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। ऐ अल्लाह! कुफ़्र और ग़रीबी से तेरी पनाह चाहता हूँ, और क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ, तेरे अ़लावा कोई इबादत के योग्य नहीं।" {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

आप ﷺ का इर्शाद है: "जो शख़्स 'सैइदुल् इस्तिग़्फ़ार' दिन में दिल के यक़ीन के साथ पढ़े और शाम होने से पहले उसे मौत आ जाये तो वह जन्नती है। और जो इसे यक़ीन के साथ रात को पढ़े और सुबह होने से पहले उसे मौत आ जाये तो वह जन्नती है।"

'सैइदुल् इस्तिग़्फ़ार' यह है:

«اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ».

"अल्लाहुम्म अन्त रब्बी, ला इलाह इल्ला अन्त, ख़लक़्तनी व अना अ़ब्दुक, व अना अ़ला अ़हदिक व वअ़्दिक मस्ततअ़्तु, अऊज़ु बिक मिन् शर्रि मा सनअ़्तु, अबूउ लक बिनिअ़्मतिक अ़लैय व अबूउ बिज़म्बी फ़ग़्फ़िर् ली फ़इन्नहु ला यग़्फ़िरुज़् ज़ुनूब इल्ला अन्त।"

‘‘ऐ अल्लाह तू ही मेरा रब है, तेरे अ़लावा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू ने मुझे पैदा किया, और मैं तेरा बंदा हूँ, और मैं तेरे प्रतिज्ञा तथा वादे पर क़ायम हूँ जिस क़दर ताक़त रखता हूँ, मैं ने जो कुछ किया उस की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ, अपने आप पर तेरी नेमत का इक़रार करता हूँ, और अपने पाप को स्वीकार करता हूँ, अतः मुझे माफ़ कर दे, क्योंकि तेरे सिवा कोई पापों को नहीं माफ़ कर सकता।’’ {बुख़ारी}

सूरह ‘इख़लास’, सूरह ‘फ़लक़’ और सूरह ‘नास’, आप ने ख़बर दी कि सुबह व शाम को तीन तीन बार इन तीनों सूरतों को पढ़ना हर चीज़ से किफ़ायत करेगा। {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

इसी तरह आप ने फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह और शाम को तीन मर्तबा ज़ैल की दुआ पढ़ेगा उस को कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहूँचायेगीः

«بِسْمِ اللهِ الَّذِي لاَ يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الأَرْضِ وَلاَ فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ».

‘‘बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअ़स्मिहि शैउन् फ़िल्अर्ज़ि वला फ़िस्समाइ व हुवस्समीउ़ल् अ़लीम’’।

‘‘उस अल्लाह के नाम के साथ जिस के नाम के साथ ज़मीन व आस्मान में कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहूँचाती, और वह ख़ूब सुनने वाला बड़ा जानने वाला है।’’ {अल्बानी रचित सहीह इब्नु माजा}

और आप ﷺ ने अबू बक्र رضي الله عنه को तालीम दी कि वह सुबह और शाम को कहेः

«اللَّهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ، أَشْهَدُ أَنْ لاَّ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا، أَوْ أَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ».

“अल्लाहुम्म आ़लिमल् ग़ैबि वश्शहादह, फ़ातिरस् समावाति वल्अर्ज़, रब्ब कुल्लि शैइन् व मलीकह, अश्हदु अल्ला इलाह इल्ला अन्त, अऊ़ज़ु बिक मिन् शर्रि नफ़्सी, व मिन् शर्रिश् शैतानि व शिर्किह, व अन् अक़्तरिफ़ अ़ला नफ़्सी सूअन् औ अजुर्रहु इला मुस्लिम”।

“ऐ अल्लाह! ग़ैब और हाज़िर को जानने वाले, आस्मानों और ज़मीन को पैदा करने वाले, हर चीज़ के प्रभु तथा मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अ़लावा कोई इबादत के लायक़ (योग्य) नहीं। मैं तेरी पनाह मांगता हूँ अपने आत्मा की बुराई से और शैतान की बुराई तथा उस के शिर्क से, और इस बात से कि मैं अपने नफ़्स पर बुराई का इर्तिकाब करूँ अथवा किसी मुसलमान के लिए बुराई का कारण बनूँ।” {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

और आप ने अपनी लख़्ते जिगर फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को सुबह और शाम में पढ़ने की वसीयत की:

«يَا حَيُّ! يَا قَيُّومُ! بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ، أَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ، وَلاَ تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ». [الصحيحة]

“या हय्यु! या क़य्यूमु! बिरह्मतिक अस्तग़ीसु, अस्लिह् ली शानी कुल्लहु, व ला तकिल्नी इला नफ़्सी तर्फ़त ऐ़निन्”।

“ऐ हय्य (जीवित)! ऐ क़य्यूम (सब का थामने वाला)! मैं तेरी रहमत के वसीला से फ़रियाद करता हूँ। मेरे तमाम काम दुरुस्त कर दे। और आँख झपकने के बराबर भी मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर।” {सिल्सिला सहीहा}

और आप ने इर्शाद फ़रमाया:

«مَنْ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ وَحِينَ يُمْسِي: سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ مِائَةَ مَرَّةٍ لَمْ يَأْتِ أَحَدٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ، إِلاَّ أَحَدٌ قَالَ مِثْلَ مَا قَالَ أَوْ زَادَ». [صحيح مسلم].

“जो शख़्स सुबह व शाम को ‘सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि’ (अल्लाह पाक है

और अपनी तारीफ़ के साथ है) सौ मर्तबा पढ़े, क़ियामत वाले दिन इस से अफ़ज़ल (अ़मल) कोई शख़्स नहीं लायेगा, मगर वह शख़्स जिस ने उस की मिस्ल या उस से ज़्यादा यह कलिमात कहे।'' {मुस्लिम}

और आप ने यह भी फ़रमाया कि यह कलिमात उस के गुनाहों को मिटा देते हैं अगर चे समंदर की झाग के बराबर हों।

और नबी ﷺ ने फ़रमाया:

«مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ، كَانَتْ لَهُ عَدْلُ عَشْرِ رِقَابٍ، وَكُتِبَتْ لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ، وَمُحِيَتْ عَنْهُ مِائَةُ سَيِّئَةٍ، وَكَانَتْ لَهُ حِرْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ يَوْمَهُ ذَلِكَ حَتَّى يُمْسِيَ، وَلَمْ يَأْتِ أَحَدٌ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلاَّ رَجُلٌ عَمِلَ أَكْثَرَ مِنْهُ». [صحيح مسلم].

''जो शख़्स दिन में सौ मर्तबा यह कलिमात कहे: 'ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर' (अल्लाह के अ़लावा कोई सत्य माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक व साझी नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है), उसे दस ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा, उस के लिए सौ नेकीयाँ लिखी जायेंगी और उस की सौ बुराइयाँ मिटा दी जायेंगी। और यह कलिमात उस के लिए उस दिन शाम तक शैतान से बचाव का ज़रीया हूँगे। (क़ियामत वाले दिन) कोई शख़्स उस से ज़्यादा फ़ज़ीलत वाला अ़मल ले कर हाज़िर नहीं होगा, सिवाय उस शख़्स के जिस ने उस से ज़्यादा यह अ़मल किया होगा।'' {मुस्लिम}

और आप ने फ़रमाया:

«مَنْ صَلَّى عَلَيَّ حِينَ يُصْبِحُ عَشْرًا، وَحِينَ يُمْسِي عَشْرًا، أَدْرَكَتْهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ». [حسّنه في صحيح الجامع].

‘‘जो शख़्स मेरे ऊपर सुबह को दस मर्तबा और शाम को दस मर्तबा दुरूद भेजेगा, क़ियामत वाले दिन उस को मेरी शफ़ाअ़त नसीब होगी।’’ {अल्बानी ने इसे सहीहुल् जामेअ़् में हसन क़रार दिया है}

जो सिर्फ़ सुबह में कहा जायेगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

«مَنْ قَالَ إِذَا أَصْبَحَ: رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا، وَبِالإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا، فَأَنَا الزَّعِيمُ لَآخُذَنَّ بِيَدِهِ حَتَّى أُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ». [الصحيحة].

‘‘जो शख़्स सुबह के वक़्त कहेः ‘रज़ीतु बिल्लाहि रब्बा, व बिल्इस्लामि दीना, व बिमुहम्मदिन नबिय्या’। (मैं राज़ी हो गया अल्लाह के रब होने पर और इस्लाम को दीन अख़्तियार करने पर और मुहम्मद ﷺ को नबी तस्लीम करने पर), तो मैं ज़ामिन हूँ कि ज़रूर उस का हाथ पकड़ा रहूंगा यहाँ तक कि उस को जन्नत में दाख़िल कर दूँ।’’ {सिल्सिला सहीहा}

जो सिर्फ़ शाम में कहा जायेगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़बर दी कि जो शख़्स शाम के वक़्त तीन मर्तबा यह कहेः

«أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ».

‘‘अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़लक़’’।

‘‘मैं अल्लाह तआ़ला के परिपूर्ण वाणी (मुकम्मल कलिमात) के ज़रीया उन तमाम चीज़ों की बुराई से पनाह चाहता हूँ जो उस ने पैदा की हैं।’’

उस को वह रात कोई ज़हरीली चीज़ (जैसे साँप, बिच्छू) नुक़सान नहीं पहूँचायेगी। {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

पानाहार (खानपान) में नबी ﷺ का तरीक़ा व निर्देशना

खाने में नबी ﷺ का तरीक़ा यह था कि आप मौजूद खाने को वापस नहीं करते और ग़ैर मौजूद को हाज़िर करने की तकलीफ़ नहीं देते, बल्कि पाकीज़ा और हलाल चीज़ों में से जो भी पेश की जाती तनावुल् फ़रमा लेते, मगर यह कि आप की तबीअ़त न चाहे, तो हराम किये बिना उस से बाज़ रहते। और आप ने कभी किसी खाने में ऐब नहीं निकाला। अगर वह खाना पसंद होता तो खा लेते वर्‌न छोड़ देते। {बुख़ारी}

और आप खाना पेश करने वाले की दिल जूई की ख़ातिर खाने की तारीफ़ करते। {मुस्लिम}

और आप का तरीक़ा यह था कि आप मयस्सर (सुलभ) खाने पर बस करते। और अगर उस का हुसूल (प्राप्ति) दुशवार होता तो सब्र करते यहाँ तक कि भूक की वजह से आप अपने पेट पर पत्थर भी बाँध लेते। इसी तरह (कभी कभी) पूरा दिन गुज़र जाता मगर भूक दूर करने के लिए रद्दी खजूर भी नसीब न होती। और (बसा औक़ात) तीन तीन महीने गुज़र जाते आप के घरों में चूल्हे नहीं जलते। {बुख़ारी}

और रसूलुल्लाह ﷺ जब अपने घर में दाख़िल होते तो पूछतेः "क्या तुम लोगों के पास कुछ है?" अगर जवाब में कहा जाता कि नहीं, तो आप फ़रमाते किः "मैं रोज़े से हूँ।" {अल्‌बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और आप सोमवार और जुमेरात को रोज़ा रखते। {अल्बानी रचित सहीह नसाई}

नीज़ आप हर महीना तीन रोज़े रखते। {मुस्लिम}

और आप खाने के शुरू में अल्लाह का नाम लेते यानी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ते। और आख़िर में उस की तारीफ़ करते हुये कहते:

«الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ، غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلاَ مُوَدَّعٍ، وَلاَ مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا». [صحيح البخاري].

''अल्हम्दु लिल्लाहि हम्दन् कसीरन् तैइबम् मुबारकन् फ़ीह, ग़ैर मक्फ़ीइन् वला मुवद्दइन्, वला मुस्तग़्ननन् अन्हु रब्बना''।

''हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, ऐसी तारीफ़ जो बहुत हो, पाकीज़ा हो और उस में बरकत दी गई हो। न इस से किफ़ायत की गई है और न यह आख़िरी खाना है और न इस से बे नियाज़ी हो सकती है, ऐ हमारे रब!।'' {बुख़ारी}

नीज़ आप फ़रमाते:

«مَنْ أَكَلَ طَعَامًا فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي هَذَا، وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلاَ قُوَّةٍ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ». [صحيح الترمذي للألباني].

''जिस शख़्स ने खाना खाया, फिर यह दुआ पढ़ी: 'अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्अ़मनी हाज़ा, व रज़क़नीहि मिन् ग़ैरि हौलिम् मिन्नी व ला क़ुव्वह्' (तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे यह खिलाया और यह रिज़्क़ मुझे दिया, बग़ैर मेरी ताक़त या तदबीर और क़ुव्वत के), तो उस के अगले तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।'' {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

और आप तीन उँगलीयों से तनावुल फ़रमाते, और जब खाने से फ़ारिग़ होते तो उन्हें पोंछने से पहले चाट लेते।

और आप दायें हाथ से खाने का हुक्म देते और फ़रमाते कि शैतान अपने बायें हाथ से खाता पीता है।

और आप टेक लगा कर खाना नहीं खाते। आप के बेशतर खाने ज़मीन पर रखे जाते (ज़्यादातर आप ज़मीन पर बैठ कर खाना खाते)।

और आप ने खड़े हो कर पीने से मना फ़रमाया है। आप का बेशतर पीना बैठ कर होता। और जब आप पीते तो बर्तन से बाहर तीन मर्तबा सांस लेते, और फ़रमातेः ''ऐसा करने से ख़ूब सैरी होती है, और प्यास बुझती है (या बीमारी से तंदुरुस्ती होती है), और पानी अच्छी तरह हज़्म होता है।'' {मुस्लिम}

और आप खिलाने पिलाने वाले के लिए यूँ दुआ करतेः

«اللَّهُمَّ أَطْعِمْ مَنْ أَطْعَمَنِي، وَاسْقِ مَنْ سَقَانِي». [صحيح مسلم].

''अल्लाहुम्म अत्इम् मन् अत्अ़मनी वस्क़ि मन् सक़ानी''।

''ऐ अल्लाह! तू उस को खिला जिस ने मुझे खिलाया, और तू उस को पिला जिस ने मुझे पिलाया।'' {मुस्लिम}

और मेज़बान के लिए ऐसे दुआ फ़रमातेः

«اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ». [صحيح مسلم].

''अल्लाहुम्म बारिक् लहुम् फ़ीमा रज़क़्तहुम् वग़्फ़िर् लहुम् वर्हम्हुम्''।

''ऐ अल्लाह! जो रिज़्क़ तू ने उन को दिया है उस में उन के लिए बरकत अ़ता फ़रमा, उन को माफ़ कर दे और उन पर रहम फ़रमा।'' {मुस्लिम}

पहनने, चलने-फिरने और सवार होने में आप ﷺ का तरीक़ा तथा निर्देशना

रसूलुल्लाह ﷺ जब कपड़ा पहनते तो यह दुआ पढ़तेः

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي هَذَا الثَّوْبَ وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلاَ قُوَّةٍ». [صحيح أبي داود للألباني].

''अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़स्सौब व रज़क़नीहि मिन् ग़ैरि हौलिम् मिन्नी व ला क़ुव्वह् (तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे यह कपड़ा पहनाया और मुझे यह इनायत फ़रमाया, बग़ैर मेरी ताक़त या तदबीर और क़ुव्वत के)।'' {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और जब आप नया कपड़ा पहनते तो उस का नाम -जैसे पगड़ी, क़मीस या चादर- लेते, फिर यह दुआ पढ़तेः

«اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيهِ، أَسْأَلُكَ خَيْرَهُ وَخَيْرَ مَا صُنِعَ لَهُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ». [صحيح أبي داود للألباني].

''अल्लाहुम्म लकल् हम्दु अन्त कसौतनीहि, अस्अलुक ख़ैरहु व ख़ैर मा सुनिअ़ लहु, व अऊज़ु बिक मिन् शर्रिहि व शर्रि मा सुनिअ़ लहु''।

''ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए तारीफ़ें हैं, तू ने ही मुझे यह कपड़ा पहनाया है।

मैं इस की भलाई का और जिस ग़र्ज़ के लिए यह बनाया गया है उस की भलाई का तुझ से सवाल करता हूँ, और इस की बुराई से और जिस ग़र्ज़ के लिए यह बनाया गया है उस की बुराई से तेरी पनाह तलब करता हूँ।'' {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और रसूलुल्लाह ﷺ के नज़दीक सब से पसंदीदा लिबास क़मीस (कुर्ता) और हिबरा (लाल रंग के नक़्शे दार रूई की बनी हुई यमनी चादर) थे।

और आप के नज़दीक रंगों में सब से पसंदीदा रंग सफ़ेद था। आप का इर्शाद है:

«خَيْرُ ثِيَابِكُمْ الْبَيَاضُ، فَالْبَسُوهَا، وَكَفِّنُوا فِيهَا مَوْتَاكُمْ». [صحيح ابن ماجه للألباني].

''तुम्हारे कपड़ों में से बेहतरीन कपड़े सफ़ेद हैं, लिहाज़ा उसे तुम ख़ुद भी पहनो और अपने मुर्दों को भी उसी में कफ़नाया करो।'' {अल्बानी रचित सहीह इब्नु माजा}

और आप ख़ालिस लाल रंग नापसंद फ़रमाते। और आप ने उस से मना भी फ़रमाया।

और रसूलुल्लाह ﷺ ने औ़रत का लिबास पहनने वाले मर्द पर नीज़ मर्द का लिबास पहनने वाली औ़रत पर लानत फ़रमाई है। आप ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र को ज़र्द रंग के दो कपड़े पहने हुये देख कर फ़रमाया:

«إِنَّ هَذَا مِنْ ثِيَابِ الْكُفَّارِ فَلاَ تَلْبَسْهَا» [صحيح مسلم].

''बेशक यह काफ़िरों का लिबास है, लिहाज़ा तुम इसे मत पहनो।'' {मुस्लिम}

और आप ने शुहरत के लिबास से और मर्दों को रेशम तथा सोना पहनने से मना फ़रमाया। नीज़ आप ने तकब्बुर के तौर पर कपड़ा ज़मीन पर घसीट कर चलने से और टख़नों के नीचे कपड़ा लटकाने से भी -चाहे तकब्बुर के तौर पर हो या बिला तकब्बुर- मना फ़रमाया। आप का इर्शाद है:

«مَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ مِنَ الإِزَارِ فَفِي النَّارِ». [صحيح البخاري].

"तहबंद (वग़ैरा) का जो हिस्सा टख़नों से नीचे होगा, वह आग में होगा।" {बुख़ारी}

और आप का तहबंद आधी पिंडली तक हुआ करता था। {इसे अल्बानी ने शमाइल में सहीह क़रार दिया है}

और जब आप क़मीस ज़ेबतन फ़रमाते (पहनते) तो अपने दायें से शुरू करते। आप का फ़रमान है:

«إِذَا لَبِسْتُمْ، وَإِذَا تَوَضَّأْتُمْ، فَابْدَؤُوا بِأَيَامِنِكُمْ». [صحيح أبي داود للألباني].

"जब तुम कपड़ा पहनो और वुज़ू करो तो दायें आ'ज़ा (अंगों) से शुरू करो।" {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और निकालते समय बायें से शुरू करते। और इसी तरह जूते पहनते वक़्त भी किया करते। आप ने दायें पैर के संबंध में फ़रमाया:

«لِتَكُنْ أُولاَهُمَا تُنْعَلُ، وَآخِرَهُمَا تُنْزَعُ». [صحيح البخاري].

"जूता पहनते वक़्त दायाँ पैर पहले हो, और उतारते वक़्त आख़िर में हो।" {बुख़ारी}

और आप ने एक जूता पहन कर चलने से मना फ़रमाया। {बुख़ारी}

और आप कभी कभी नंगे या ख़ाली पैर भी चलते। {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और नबी ﷺ जब चलते तो आगे को झुकते हुये इस तरह चलते गोया कि ऊँचाई से उतर रहे होते।

और आप ﷺ जब सवारी के जानवर पर सवार होने के लिए उस के रिकाब (पाद धारणी) में अपना पैर रखते तो (بِسْمِ اللهِ) 'बिस्मिल्लाह' (अल्लाह के नाम

से) कहते। और जब उस की पीठ पर सीधे बैठ जाते तो (الْحَمْدُ لِلَّهِ) 'अल्हम्दु लिल्लाह' (तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं) कहते, फिर पढ़तेः

«سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا، وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ، وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ».

''सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा, व मा कुन्ना लहु मुक़्रिनीन, व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून''।

''पाक ज़ात है उस की जिस ने इसे हमारे बस में कर दिया हालाँकि हमें इसे क़ाबू में करने की ताक़त न थी। और यक़ीनन हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं।''

इस के बाद तीन मर्तबा 'अल्हम्दु लिल्लाह' और फिर तीन मर्तबा 'अल्लाहु अक्बर' कहते, फिर यह दुआ पढ़तेः

«اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي، إِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ». [صحيح أبي داود للألباني].

''अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर् ली, इन्नहु ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त''।

''ऐ अल्लाह! बेशक मैं ने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया, पस तू मुझे बख़्श दे, तेरे सिवा कोई गुनाहों को बख़्शने वाला नहीं।'' {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}.

रसूलुल्लाह ﷺ के अख़लाक़ और लोगों के साथ तआ़मुल (आचरण) में आप का तरीक़ा तथा निर्देशना

रसूलुल्लाह ﷺ लोगों में सब से ज़्यादा हुस्न व जमाल के पैकर और उन में सब से अच्छे अख़लाक़ के अधिकारी थे। {बुख़ारी} पस न तो आप बेहूदा बातें करने वाले, न तो बद ज़ुबानी करने वाले और न ही बाज़ारों में शोर व शग़ब करने वाले थे। {अल्‍बानी रचित सहीह तिर्‍मिज़ी}

नीज़ आप बुराई का बदला बुराई से नहीं लेते, बल्कि माफ़ी और दर्‍गुज़र से काम लेते।

और आप ने कभी किसी ज़ुल्म का (अपनी ज़ात के लिए) इंतिक़ाम नहीं लिया, मगर यह कि अल्लाह की हुर्मत को तोड़ा (हराम कामों का इर्‍तिकाब किया) जा रहा हो। पस जब अल्लाह की हुर्मत को तोड़ा जाता तो आप इस संबंध में लोगों में सब से ज़्यादा ग़ज़बनाक होते।

और जब भी रसूलुल्लाह ﷺ को दो कामों के दरमियान अख़्तियार दिया गया तो आप ने उन में से ज़्यादा आसान काम को अख़्तियार फ़रमाया, बशर्तेकि उस में गुनाह न होता। {बुख़ारी}

और आप ने अपने हाथ से कभी किसी चीज़ को नहीं मारा, न ग़ुलाम को, न औ़रत को और न किसी ख़ादिम को। हाँ, मगर आप अल्लाह की

राह में जिहाद करते (जिस में आप यक़ीनन दुशमन को मारते)। {मुस्लिम}
अनस رضي الله عنه बयान फ़रमाते हैं कि:

«خَدَمْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَشْرَ سِنِينَ، فَمَا قَالَ لِي أُفٍّ قَطُّ، وَمَا قَالَ لِي لِشَيْءٍ صَنَعْتُهُ: لِمَ صَنَعْتَهُ؟ وَلاَ لِشَيْءٍ تَرَكْتُهُ: لِمَ تَرَكْتَهُ؟». [صحيح الترمذي للألباني].

''मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ की दस साल ख़िदमत की, आप ने मुझे कभी उफ़ तक नहीं कहा। और जो काम मैं ने किया उस की बाबत यह नहीं कहा कि यह क्यों किया? और जो काम मैं ने छोड़ दिया उस की बाबत यह नहीं कहा कि इस काम को क्यों छोड़ दिया?'' {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

और रसूलुल्लाह ﷺ जब मुसाफ़हा करते या आदमी आप से मुसाफ़हा करता तो आप अपना हाथ उस के हाथ से उस वक़्त तक न खींचते जब तक कि वह आदमी खुद अपना हाथ खींच न लेता। {अल्बानी रचित सहीह इब्नु माजा}

और आप अपने चेहरे तथा अपनी बातों से आदमी का इस तरह सामना फ़रमाते कि वह गुमान करने लगता कि वह आप के नज़दीक लोगों में सब से ज़्यादा महबूब है। जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رضي الله عنه बयान करते हैं कि:

«مَا رَآنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ مُنْذُ أَسْلَمْتُ إِلاَّ تَبَسَّمَ». [صحيح البخاري].

''मेरे इस्लाम लाने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ मुझ से हमेशा मुसकुराहट ही के साथ मिलते।'' {बुख़ारी}

नीज़ अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस رضي الله عنه बयान करते हैं कि:

«مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَكْثَرَ تَبَسُّمًا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ». [صحيح الترمذي للألباني].

''मैं ने किसी को रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा मुसकुराते नहीं देखा।'' {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

और रसूलुल्लाह ﷺ इस क़दर ठहर ठहर कर बातें करते कि अगर गिनने वाला गिनना चाहता तो गिन सकता। और आप की गुफ़्तगू इतनी साफ़ और वाज़िह होती कि हर सुनने वाला समझ लेता। और आप जल्दी जल्दी बातें नहीं करते। और आप शब्द को तीन मर्तबा दोहराते यहाँ तक कि वह (अच्छी तरह) समझ लिया जाता।

और जब आप तक किसी आदमी के संबंध में कोई चीज़ पहुँचती तो आप यह नहीं फ़रमाते कि अमुक व्यक्ति (फ़लाना) का क्या हाल है वह ऐसा कहता है, बल्कि आप फ़रमाते कि लोगों का क्या हाल है कि वे ऐसा ऐसा कहते हैं। {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और आप हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल रहते। सहाबये किराम शुमार करते कि आप एक मजलिस में इस्तिग़फ़ार (मग़फ़िरत तलब) करते हुये सौ मर्तबा कहते:

«رَبِّ اغْفِرْ لِي، وَتُبْ عَلَيَّ، إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ». [صحيح أبي داود للألباني].

"रब्बिग़्फ़िर् ली, व तुब् अ़लैय, इन्नक अन्तत्तव्वाबुर्रहीम"।

"ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे, मेरी तौबा क़बूल फ़रमा, बेशक तू बहुत तौबा क़बूल करने वाला, निहायत मेहेरबान है।" {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और आप का इर्शाद है:

«وَاللَّهِ إِنِّي لأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً». [صحيح البخاري].

"मैं दिन में सत्तर मर्तबा से ज़्यादा अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता और उस की तरफ़ तौबा करता हूँ।" {बुख़ारी}

और आप बकस्रत (अधिकाधिक) यह दुआ किया करते:

«رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ». [صحيح البخاري].

"रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसना, व फ़िल्आख़िरति हसना, व क़िना अ़ज़ाबन्नार"।

"ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में नेकी दे, और आख़िरत में भलाई अ़ता फ़रमा, और हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से नजात दे।" {बुख़ारी}

«يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ! ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ». [صحيح الترمذي للألباني].

"ऐ दिलों के फेरने वाले! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित रख।" {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

और आप मजलिस के आख़िर में पढ़ते:

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ».

[صحيح أبي داود للألباني].

"सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक, अशहदु अल्ला इलाह इल्ला अन्त, अस्तग़फ़िरुक व अतूबु इलैक"।

"ऐ अल्लाह! तू पाक है अपनी तारीफ़ों के साथ, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, मैं तुझ से गुनाहों की माफ़ी मांगता और तेरी तरफ़ रुजू करता हूँ।" {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और आप ﷺ घर के गोशे में पर्दा नशीन कुंआरी लड़की से भी ज़्यादा हयादार थे। और जब आप किसी चीज़ को नापसंद फ़रमाते तो आप के चेहरे के (आसार) से पहचान लिया जाता। {बुख़ारी}

और आप ﷺ सब से ज़्यादा सख़ी थे। कभी ऐसा नहीं हुआ कि आप

से कोई चीज़ मांगी गई हो और आप ने जवाब में फ़रमाया होः ‘नहीं’। {बुख़ारी}

और आप उस शख़्स की तरह अ़ता करते जिसे फ़क्र का अंदेशा नहीं होता। {मुस्लिम} आप का इर्शाद हैः

«لَوْ كَانَ لِي مِثلُ أُحُدٍ ذَهَبًا، مَا سَرَّنِي أَنْ تَأْتِيَ عليَّ ثَلاَثُ لَيَالٍ وَعِنْدِي مِنْهُ شَيءٌ، إِلاَّ شَيْءٌ أَرْصِدُهُ لِدَيْنٍ». [صحيح البخاري]

“अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना हो तो मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती कि मेरी तीन रातें इस हाल में गुज़रें कि उस में से मेरे पास कुछ बाक़ी रह जाये, सिवाय इतने हिस्से के जो मैं क़र्ज़ की अदायेगी के लिए संभाल कर रख लूँ।” {बुख़ारी}

और आप ﷺ लोगों में सब से ज़्यादा बुर्दबार थे। पस आप के पास ऐसा आदमी भी आता जो बड़ी सख़्ती के साथ आप की चादर को खींचता जिस से आप की गर्दन में निशान पड़ जाते, और ख़िताब (संबोधन} में सख़्त लहजा अपनाता, इस के बावुजूद आप उस की तरफ़ मुतवज्जह हो कर मुसकुरा देते और फिर उस को देने का हुक्म देते। {बुख़ारी}

और आप लोगों में सब से ज़्यादा दिलेर और बहादुर थे। बरा बिन मालिक رضي الله عنه -जो बहादुरी में मिसाल दिये जाते थे- बयान फ़रमाते हैं किः

«إِذَا احْمَرَّ الْبَأْسُ نَتَّقِي بِرَسُولِ اللهِ ﷺ، وَإِنَّ الشُّجَاعَ مِنَّا هُوَ الَّذِي يَقْتَرِبُ مِنْهُ فِي الْحَربِ لِشِدَّةِ قُرْبِهِ مِنَ الْعَدُوِّ». [صحيح مسلم].

“जब लड़ाई ख़ूंख़ार होती तो हम अपने आप को रसूलुल्लाह ﷺ की आड़ में बचाते। और लड़ाई में हम में से वह शख़्स बहादुर माना जाता जो आप से क़रीब होता, क्योंकि आप दुशमन से बहुत क़रीब होते।” {मुस्लिम}

और आप ﷺ अपने सहाबा की ज़रूरतों में उन की घबराहटों को दूर फ़रमाते। पस उन में से बाज़ के क़र्ज़ अदा करते जैसे बिलाल رضي الله عنه के क़र्ज़ अदा किये। और उन में जो ग़ैर शादी शुदा होते उन की शादी कराते। और सिफ़ारिश करने के लिए जाते, जैसे जाबिर رضي الله عنه के लिए यहूदी के पास गये और क़र्ज़ की अदायेगी में मुहलत देने के लिए तीन मर्तबा सिफ़ारिश किये।

और आप के पास औ़रत अपने शौहर की शिकायत ले कर आती तो आप उस की बात समाअ़त फ़रमाते।

और आदमी जब अपने सरकश ऊँट की शिकायत ले कर आप के पास आये तो आप उस के ऊँट के पास तशरीफ़ ले गये। फिर ऊँट ने आप से मालिक की शिकायत की कि वह काम ज़्यादा लेता है और चारा कम देता है। {इसे अह्मद ने रिवायत किया है, और यह सहीहुत्तर्ग़ीब में है} तो ग़ौर करें कि जानवर भी इंसाफ़ के लिए रसूलुल्लाह ﷺ से शिकायत करते थे। सच फ़रमाया अल्लाह तआ़ला नेः

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا رَحۡمَةٗ لِّلۡعَٰلَمِينَ﴾ [الأنبياء: ١٠٧]

“और हम ने आप को तमाम जहान वालों के लिए रह्मत बना कर ही भेजा है।” {अल्अम्बियाः १०७}

और आप ﷺ ख़ाकसार और फ़रोतन (नम्र और विनयी) थे। आप बेवा और मिसकीन की ज़रूरत पूरी करने के लिए उन के साथ जाने को नापसंद नहीं फ़रमाते। (एक मर्तबा का वाक़िआ़ है कि) एक ख़ातून आप के पास आई और कहने लगीः मुझे आप से काम है (कुछ कहना है जो लोगों के सामने नहीं कह सकती)। तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

«يَا أُمَّ فُلَانٍ! اُنْظُرِي أَيَّ السِّكَكِ شِئْتِ حَتَّى أَقْضِيَ لَكِ حَاجَتَكِ». فَقَامَ مَعَهَا حَتَّى قَضَتْ حَاجَتَهَا. [صحيح مسلم].

“ऐ फ़लाना की माँ! अच्छा कोई गली देख ले, मैं तेरा काम कर दूंगा।” पस आप उस के साथ खड़े हुये यहाँ तक कि वह अपने काम से फ़ारिग़ हो गई। {मुस्लिम}

और आप जौ की रोटी और ऐसी पिघली हुई चर्बी -जिस की बू में ज़्यादा समय गुज़रने की वजह से कुछ तग़य्युर (परिवर्तन) आ चुका था- पर बुलाये जाते तो भी क़बूल फ़रमाते। आप का इर्शाद हैः

«**لَوْ أُهْدِيَ إِلَيَّ كُرَاعٌ لَقَبِلْتُ، وَلَوْ دُعِيتُ عَلَيْهِ لأَجَبْتُ**». [صحيح البخاري].

“अगर मुझे पाये हदिये के तौर पर भेजे गये तो मैं यक़ीनन् क़बूल करूंगा, और अगर मुझे उस के खाने की दावत दी जाये तो मैं ज़रूर जाऊंगा।” {बुख़ारी}

और आप की ज़िरह एक यहूदी के पास (तीस सा‘ जौ के बदले में गिर्वी) रखी हुई थी, लेकिन मरते दम तक आप के पास इतना माल हुआ ही नहीं जिस से कि उसे छुड़ा सकें। {बुख़ारी}

और आप ﷺ बच्चों के साथ नर्मी बरतते और उन के साथ खेल कूद किया करते। अनस رضي الله عنه बयान करते हैं किः

«**مَا رَأَيْتُ أَحَدًا كَانَ أَرْحَمَ بِالْعِيَالِ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ**». [صحيح مسلم].

“मैं ने किसी को नहीं देखा जो बाल बच्चों पर रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा मेहेरबान हो।” {मुस्लिम}

और आप बच्चों के सामने से गुज़रते हुये उन्हें सलाम किया करते। {बुख़ारी}

रसूलुल्लाह ﷺ का तरीक़ा तथा निर्देशना अपने घर में रहन सहन के बारे में और आप के सोने के संबंध में

आप के सारे घर कच्ची ईंटों से बने हुये थे और उन की छतें खजूर की शाख़ों की थीं। और घर इतने तंग थे कि जब आप तहज्जुद की नमाज़ में सज्दा करने का इरादा फ़रमाते तो आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पैर को आहिस्ता से दबा देते। पस वह अपने दोनों पैरों को समेट लेतीं ताकि आप सज्दा कर सकें। और जब आप खड़े हो जाते तो वह उन्हें फिर फैला देतीं। इसी तरह आप का घर इस क़दर नीचा था कि उस में दाख़िल होने वाला अपने हाथ से (आसानी के साथ चीज़ें) उस की छत से ले सकता था।

और जब आप अपने घर में तशरीफ़ लाते तो मिसवाक से शुरू फ़रमाते। और घर वालों को इस अंदाज़ से सलाम करते कि सोये हुये को बेदार न करते और बेदार को सुना देते। {मुस्लिम}

और आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः

«إِذَا وَلَجَ الرَّجُلُ بَيْتَهُ فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلِجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ، بِسْمِ اللهِ وَلَجْنَا، وَعَلَى اللهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا، ثُمَّ لِيُسَلِّمْ عَلَى أَهْلِهِ». [الصحيحة وصحيح الجامع].

“जब आदमी अपने घर में प्रवेश करे तो कहेः ‘अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरल् मौलिजि व ख़ैरल् मख़्रज, बिस्मिल्लाहि वलज्ना, व अ़लल्लाहि रब्बिना तवक्कल्ना’ (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दाख़िल होने और निकलने की भलाई का सवाल करता हूँ। अल्लाह के नाम से हम दाख़िल हुये और अपने रब अल्लाह पर हम ने तवक्कुल किया)। फिर अपने घर वालों को सलाम कहे।” {अल्बानी रचित सिल्सिला सहीहा और सहीहुल् जामेअ्}

और आप ने यह भी फ़रमाया कि घर में दाख़िल होते समय नीज़ खाने के वक़्त अल्लाह का नाम न लिया जाये तो रात गुज़ारने में तथा खाने में उन के साथ शैतान शरीक होता है। {मुस्लिम}

और जब आप अपने घर से निकलते तो यह दुआ पढ़तेः

«بِسْمِ اللهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ نَزِلَّ، أَوْ نَضِلَّ، أَوْ نَظْلِمَ، أَوْ نُظْلَمَ، أَوْ نَجْهَلَ، أَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا». [صحيح الترمذي للألباني].

“बिस्मिल्लाह, तवक्कल्तु अ़लल्लाह, अल्लाहुम्म इन्ना नऊ़ज़ु बिक मिन् अन् नज़िल्ल, औ नदिल्ल, औ नज़्लिम, औ नुज़्लम, औ नज्हल, औ युज्हल अ़लैना”।

“अल्लाह के नाम से, अल्लाह ही पर मैं ने भरोसा किया, ऐ अल्लाह! हम पनाह मांगते हैं इस बात से कि हम फिसल जायें, या गुमराह हो जायें, या हम किसी पर जुल्म करें, या हम पर जुल्म किया जाये, या हम जाहिलाना बर्ताव करें या हमारे साथ जाहिलाना बर्ताव किया जाये।” {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

और आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः

«مَنْ قَالَ: بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ، يُقَال لَهُ: هُدِيتَ، وَكُفِيتَ، وَوُقِيتَ، وَتَنَحَّى عَنْهُ الشَّيْطَانُ». [صحيح أبي داود للألباني].

''जो शख़्स (घर से निकलते वक़्त) यह पढ़ ले: 'बिस्मिल्लाह, तवक्कल्तु अ़लल्लाह, व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह''। (अल्लाह के नाम के साथ (निकल रहा हूँ), मैं ने अल्लाह ही पर भरोसा किया, गुनाह से फिरना और नेकी की कुव्वत का मयस्सर आ जाना अल्लाह की मदद के बग़ैर मुमकिन नहीं)। तो उसे कहा जाता है: तू हिदायत दिया गया, तेरी किफ़ायत की गई और तू बचा लिया गया। और शैतान उस से दूर हो जाता है।'' {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से पूछा गया: रसूलुल्लाह ﷺ अपने घर में क्या क्या काम करते थे? तो उन्हों ने जवाब दिया: आप अपने घर वालों की ख़िदमत में लगे रहते थे। पस जब अज़ान सुनते तो (नमाज़ के लिए) तशरीफ़ ले जाते। {बुख़ारी}

और उन्हों ने यह भी फ़रमाया कि: आप बशरों (मनुष्यों) में से एक बशर थे, कपड़ों से तक्लीफ़ देह चीज़ें (जैसे जूंयें) निकालते, बकरी दूहते और अपने काम खुद अंजाम देते। {अल्बानी रचित सिल्सिला सहीहा}

और आप ﷺ अपने अह्ल व अ़याल के लिए लोगों में सब से बेहतर थे, और उन के साथ गुज़र बसर के तअ़ल्लुक़ से सब से अफ़ज़ल थे। पस आप आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की लंबी गुफ़्तगू काटे बिना रात में देर तक सुनते और इस के बाद उन से नर्मी का बर्ताव करते। {बुख़ारी}

और आप आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ दौड़ का मुक़ाबला करते, पस कभी आ़इशा आप से आगे बढ़ जातीं और कभी आप आइशा से आगे बढ़ जाते। {अल्बानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और जब आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने ईद के दिन हबशीयों को देखने की ख़ाहिश ज़ाहिर की इस हाल में कि वे खेल रहे थे, तो आप ने उन को अपने पीछे रख कर देखने का मौक़ा दिया यहाँ तक कि वह थक गईं।

और आप बड़े सीधे-साधे तथा नरम दिल थे। जब आप से आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कुछ फ़रमाइश करती थीं तो आप मान लेते थे। {मुस्लिम}

और आप अपने ऊँट के पास बैठ कर अपने मुबारक घुटने को रख दिये ताकि आप की बीवी सफ़िय्या रज़ियल्लाहु अ़न्हा उस पर अपना पैर रख कर बआसानी ऊँट पर सवार हो सके। {बुख़ारी}

और आप अपनी बीवीयों से उन की ग़ैरत को बरदाश्त करते हुये सब्र का दामन थामे रहते और उन के साथ नर्मी का बरताव करते। {बुख़ारी}

और आप ﷺ का बिस्तर चमड़े का था जिस में खजूर के दरख़्त की पतली छाल भरी हुई थी। और इसी तरह आप का तकिया भी। और आप एक चटाई पर सोये जिस से आप के पहलू में निशान पड़ गये। {बुख़ारी}

और आप हर रात को जब अपने बिस्तर की तरफ़ क़रार पकड़ते तो अपनी दोनों हथेलीयों को इकट्ठा करते, फिर उन में फूँकते और उन में यह सूरतें:

﴿قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَـدٌ﴾، ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلْفَلَقِ﴾، ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ﴾.

(सूरह इख़लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास) पढ़ते। फिर जहाँ तक मुमकिन होता उन हथेलीयों को जिस्म पर फेर लेते। अपने सर, चेहरे और जिस्म के अगले हिस्से से उन को फेरना शुरू करते। ऐसा तीन मर्तबा करते।" {बुख़ारी}

नीज़ पढ़ते:

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا، وَكَفَانَا وَآوَانَا، فَكَمْ مِمَّنْ لاَ كَافِيَ لَهُ وَلاَ مُؤْوِيَ».

[صحيح مسلم].

‘‘अल्‌हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्‌अ़मना व सक़ाना, व कफ़ाना व आवाना, फ़कम्‌ मिम्मन्‌ ला काफ़िय लहु व ला मु‘वी’’।

‘‘तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें खिलाया, पिलाया और हमारी किफ़ायत की और हमें ठिकाना दिया। कितने ही ऐसे लोग हैं जिन का कोई किफ़ायत करने वाला और ठिकाना देने वाला नहीं।’’ {मुस्लिम}

इसी तरह जब आप अपने बिस्तर को आते तो अपना दायाँ हाथ अपने रुख़सार के नीचे रख लेते, फिर यह दुआ पढ़ते:

«اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ». [صحيح أبي داود للألباني].

‘‘अल्लाहुम्म क़िनी अ़ज़ाबक यौम तब्‌अ़सु इ़बादक’’।

‘‘ऐ अल्लाह! मुझे उस दिन अपने अ़ज़ाब से बचाना जिस दिन तू अपने बंदों को (ज़िंदा कर के) उठायेगा।’’ {अलबानी रचित सहीह अबू दाऊद}

और पढ़ते:

«بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا». [صحيح البخاري].

‘‘बिस्मिकल्लाहुम्म अमूतु व अह्‌या’’।

‘‘तेरे नाम से ऐ अल्लाह! मैं मरता और ज़िंदा होता हूँ।’’ {बुख़ारी}

और आप अपने दायें करवट पर लेटते और पढ़ते:

«اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَى مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ، وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ». [صحيح البخاري].

‘‘अल्लाहुम्म अस्लम्तु नफ़्सी इलैक, व वज्जह्तु वजूही इलैक, व फ़व्वज़्तु अम्री इलैक, व अल्जअ्तु ज़ह्री इलैक, रग़्बतन् व रह्बतन् इलैक, ला मल्जअ व ला मन्जा मिन्क इल्ला इलैक, आमन्तु बिकिताबिकल्लज़ी अन्ज़ल्त, व बिनबिय्यिकल्लज़ी अर्सल्त’’।

‘‘ऐ अल्लाह! मैं ने अपना नफ़्स तेरी तरफ़ सौंप दिया, और अपना चेहरा तेरी तरफ़ कर लिया, और अपना मामला तेरे सुपुर्द कर दिया, और मैं ने अपनी टेक (पीठ) तेरी तरफ़ लगा दी, तेरी रहमत की उम्मीद रखते हुये और तेरे अ़ज़ाब से डरते हुये। तेरे सिवा कोई ठिकाना और पनाह की जगह नहीं। मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया जो तू ने नाज़िल की और उस नबी पर ईमान लाया जिसे तू ने भेजा।’’

आप ने फ़रमाया कि जो शख़्स यह दुआ पढ़ कर सोये फिर उस रात उस की मौत हो जाये तो फ़ितरत (इस्लाम) पर उस की मौत होगी। {बुख़ारी}

और आप यह दुआ भी पढ़ते:

«اللَّهُمَّ إِنَّكَ خَلَقْتَ نَفْسِي وَأَنْتَ تَوَفَّاهَا، لَكَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاهَا، إِنْ أَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا، وَإِنْ أَمَتَّهَا فَاغْفِرْ لَهَا، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ». [صحيح مسلم].

‘‘अल्लाहुम्म इन्नक ख़लक्त नफ़्सी व अन्त तवफ़्फ़ाहा, लक ममातुहा व मह्याहा, इन् अह्ययतहा फ़ह्फ़ज़्हा, व इन् अमत्तहा फ़ग़्फ़िर् लहा, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् आ़फ़िया’’।

‘‘ऐ अल्लाह! बेशक तू ने मेरी आत्मा (नफ़्स) को पैदा किया और तू ही उस को मौत देगा, तेरे ही क़ब्ज़े में उस को मारना और ज़िंदा रखना है। अगर तू उसे ज़िंदा रखे तो उस की हिफ़ाज़त फ़रमा, और अगर मार दे तो उसे बख़्श दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से आ़फ़ियत का सवाल करता हूँ।’’ {मुस्लिम}

और आप सूरह सज्दा तथा सूरह मुल्क

﴿الٓمٓ ۝١ تَنزِيلُ...﴾، ﴿تَبَٰرَكَ ٱلَّذِى بِيَدِهِ ٱلْمُلْكُ﴾.

पढ़े बिना नहीं सोते। {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

और आप ने आयतुल् कुर्सी तथा सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतें पढ़ने की तर्ग़ीब दिलाई, और फ़रमाया कि जिस ने रात को यह दो आयतें पढ़ीं वह उस को काफ़ी हो जायेंगी। {बुख़ारी}

नीज़ आप ने यह दुआ भी पढ़ने की तर्ग़ीब दिलाई:

«بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي، وَبِكَ أَرْفَعُهُ، إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا، وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ». [صحيح البخاري].

"बिस्मिक रब्बी वज़अ्तु जम्बी, व बिक अर्फ़उहु, इन् अम्सक्त नफ़्सी फ़र्हम्हा, व इन् अर्सल्तहा फ़ह्फ़ज़्हा बिमा तह्फ़ज़ु बिहि इबादकस्सालिहीन"।

"तेरे नाम के साथ ही ऐ मेरे रब! मैं ने अपना पहलू बिस्तर पर रखा है, और तेरे ही नाम के साथ उसे उठाऊँगा, अगर तू ने मेरी रूह (इसी दौरान में) क़ब्ज़ कर ली तो उस पर रहम फ़रमाना, और अगर तू उस को छोड़ दे (क़ब्ज़ न करे) तो उस की इस तरीक़े से हिफ़ाज़त फ़रमा जैसे तू अपने नेक बंदों की हिफ़ाज़त फ़रमाता है।" {बुख़ारी}

और यह दुआ भी:

«اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ، أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَشَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ». [صحيح الترمذي للألباني].

“अल्लाहुम्म फ़ातिरस् समावाति वल्अर्ज़ि, आ़लिमल् ग़ैबि वश्शहादति, रब्ब कुल्लि शैइन् व मलीकहु, अश्हदु अल्ला इलाह इल्ला अन्त, अऊ़ज़ु बिक मिन् शर्रि नफ़्सी व शर्रिश् शैतानि व शिर्किहि”।

“ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! छुपी और ज़ाहिर चीज़ों के जानने वाले! और हर चीज़ के रब और मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। मैं अपने नफ़्स की बुराई से और शैतान की बुराई से और उस के शिर्क (के बुलावे) से तेरी पनाह तलब करता हूँ।” {अल्बानी रचित सहीह तिर्मिज़ी}

- ऐ अल्लाह! कृपा (रहमत) भेज हमारे नबी मुहम्मद पर, और आप के आले बैत (ख़ानदान) पर तथा आप की बीवीयों और आप के आल व औलाद पर, जैसे रहमत (कृपा) भेजी तू ने इब्राहीम के आल (परिवार) पर, बेशक तू महिमा और गुणगान के योग्य (बुज़ुरगी और तारीफ़ के लायेक़) है। और बरकत भेज हमारे नबी मुहम्मद पर, और आप के आले बैत (ख़ानदान) पर तथा आप की बीवीयों और आप के आल व औलाद पर, जैसे बरकत भेजी तू ने इब्राहीम के आल (परिवार) पर, बेशक तू महिमा और गुणगान के योग्य (बुज़ुरगी और तारीफ़ के लायेक़) है।

- ऐ अल्लाह! अगर हम दुनिया में अपने हबीब रसूले करीम ﷺ के दर्शन व सुहबत और आप के साथ उठने बैठने से महरूम हुये हैं, तो तू हमें आख़िरत में इस से महरूम न कर। और हमें जन्नत में हबीब ﷺ के कुर्ब व जिवार का मौक़ा इनायत फ़रमा। और आप के दीदार से तथा आप से गुफ़्तगू करने के शरफ़ से नवाज़। और हमें आप के हौज़ तक पहूँचा कर आप के मुबारक हाथ से इस तरह पिला कि उस के बाद फिर हम कभी प्यासे न हूँ।

- या करीम! हमें आप ﷺ की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमें आप की हर छोटी बड़ी सुन्नत की सुहबत व इत्तिबा की तौफ़ीक़ दे। और आप को तथा आप की सुन्नत को हमारे नज़दीक अपने वालिदैन व औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब बना दे।

- ऐ अल्लाह! तू आप ﷺ को हमारी तरफ़ से ऐसा बेहतरीन तथा भरपूर बदला अ़ता फ़रमा जैसा तू ने किसी नबी को उन की उम्मत की तरफ़ से अ़ता फ़रमाया है।

- और तू (ऐ अल्लाह!) आप को वसीला और फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमा। और उन्हें उस मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमा जिस का तू ने उन से वादा किया है, यक़ीनन तू वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

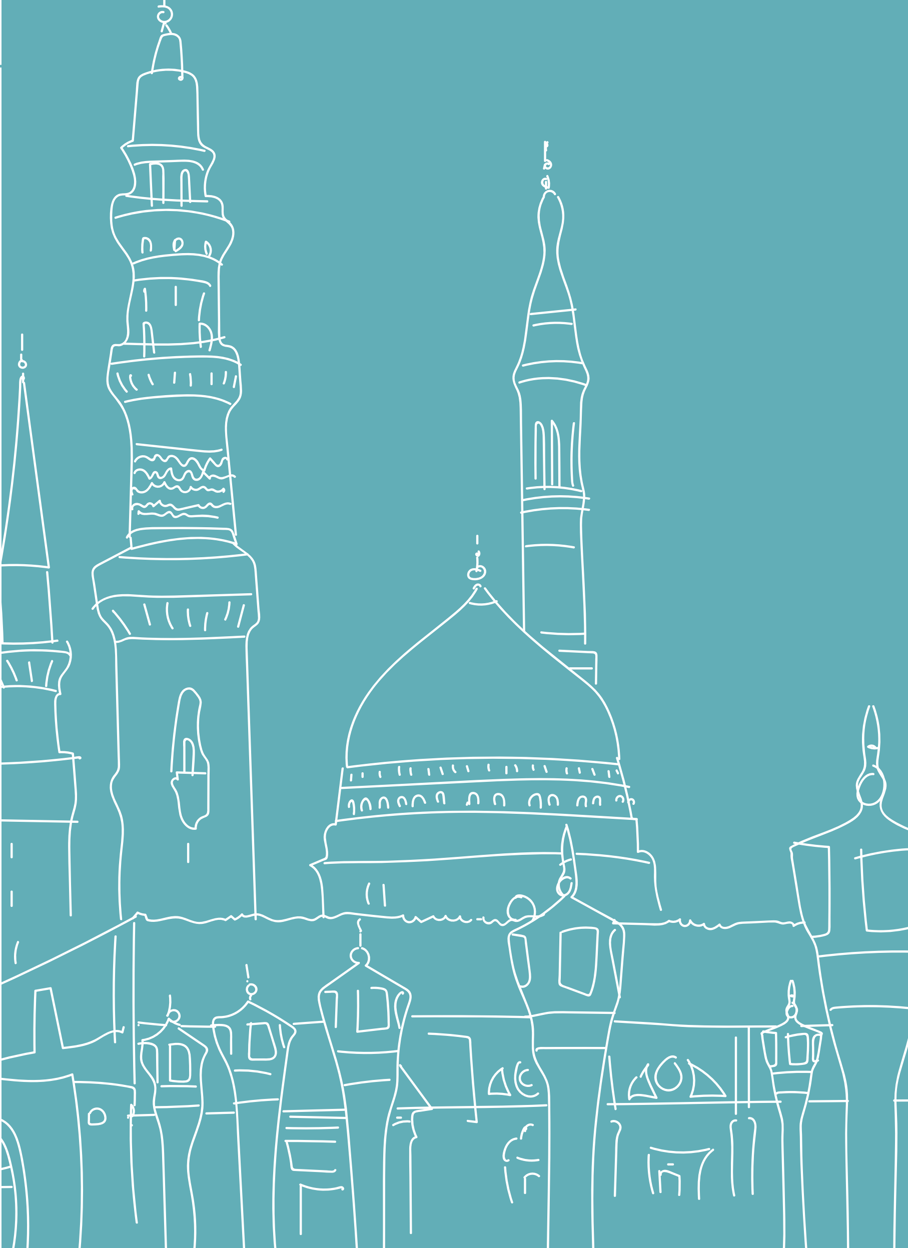

IslamHouse.com

Hindi.IslamHouse @IslamHouseHi IslamHouseHi https://islamhouse.com/hi/

IslamHouseHi

For more details visit
www.GuideToIslam.com

GUIDE TO ISLAM

contact us :Books@guidetoislam.com

Guidetolslam.org Guidetoislam1 Guidetoislam www.Guidetoislam.com

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالربوة

هاتف: ٩٦٦١١٤٤٥٤٩٠٠+ فاكس: ٩٦٦١١٤٩٧٠١٢٦+ ص ب: ٢٩٤٦٥ الرياض: ١١٤٥٧

P.O.BOX 29465 RIYADH 11457 TEL: +966 11 4454900 FAX: +966 11 4970126

OFFICERABWAH

osoulcenter

www.osoulcenter.com

To Download This Book, please Visit:

OSOUL STORE

osoulstore.com